सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

| | |
|---|---|
| एक प्रति | ₹ 12/- |
| वार्षिक | ₹ 120/- |
| विशेष वार्षिक | ₹ 500/- |
| विदेशों में (वार्षिक) | 30 यु.एस. डालर |

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
# सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

जनवरी, 2013 वर्ष 11 अंक 11

## महब्बत

माँ–बाप से महब्बत इन्सान की है फ़ितरत
औलाद से महब्बत इन्सान की है फ़ितरत
भाई बहन से उलफ़त इन्सान की है फ़ितरत
अबरार से महब्बत इन्सान की है फ़ितरत
है जान से भी बढ़ कर प्यारे नबी से उलफ़त
और सबसे हो ज़्यादा अल्लाह की महब्बत
नाज़िल हो मेरे या रब प्यारे नबी पे रहमत
औलाद पर भी उनकी या रब सदा हो रहमत

इदारा

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

# विषय एक दृष्टि में


| | | |
|---|---|---|
| कुर्आन की शिक्षा | मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी | 3 |
| प्यारे नबी की प्यारी बातें | अमतुल्लाह तस्नीम | 4 |
| दुरूद व सलाम | डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी | 5 |
| जगनायक | हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी | 8 |
| जुहरे कुदसी | अल्लामा सै0 सुलैमान नदवी | 11 |
| अ़कीद–ए–रिसालत | मौलाना अब्दुश्शकूर फारूकी रह0 | 12 |
| हदीसे जिब्रील | इदारा | 14 |
| दावत का काम करने वाले उलमा | मौलाना सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी | 15 |
| नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम | हज़रत मौ0 अबुलहसन अली नदवी | 19 |
| हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि0 | मौलाना अब्दुश्शकूर फारूकी रह0 | 21 |
| इस्लाम विरोधी प्रश्नों के उत्तर | नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी | 24 |
| आपके प्रश्नों के उत्तर | मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी | 26 |
| यौमे जमहूरिया | इदारा | 29 |
| पिस्ते का फालूदा | ज़हीर नियाज़ी रोहतासी | 30 |
| ऐतिदाल व मेयानारवी | शैख खालिद अलगामदी | 31 |
| क़यामत की निशानियाँ | डॉ0 मुहम्मद अजमल फ़ारूक़ी | 35 |
| इस्लाम के सही प्रतिनिधित्व | मौलाना असरारुल हक़ कासमी | 37 |
| अंतर्राष्ट्रीय समाचार | डॉ0 मुईद अशरफ नदवी | 40 |

# क़ुअर्नि की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

**सूर-ए-बक़र:**

अनुवाद :-

और उससे बड़ा अत्याचारी कौन? जिसने मना किया कि अल्लाह की मस्जिदों में लिया जाए वहां नाम उसका, और कोशिश की उनके उजाड़ने में[1], ऐसों को लायक़ नहीं कि दाखिल हों, उनमें मगर ड़रते हुए[2], उनके लिए दुनिया में ज़िल्लत है[3], उनके लिए आखिरत में बड़ा अज़ाब है(114)। और अल्लाह ही का है पूरब और पश्चिम, अतः जिस ओर तुम मुंह करो वहां ही मुतवज्जह है अल्लाह[4], बेशक अल्लाह ही बड़ा बख़्शने वाला, सब कुछ जानने वाला है[5](115)।

तफ्सीर (व्याख्या):-

1. इसका शाने नुजूल (अवतरित होने का कारण) ईसाई हैं कि उन्होंने यहूदियों से लड—झगड़ के तौरेत को जलाया और बैतुल मुकद्दस को खराब किया या मक्का के बहुदेववादी (मुश्रेकीन) कि उन्होंने मुसलमानों को केवल जलन व हसद से हुदैबिया में मस्जिदे हराम (बैतुल्लाह) में जाने से रोका। वैसे जो व्यक्ति किसी मस्जिद को वीरान या ख़राब करे वह इसी हुक्म में दाखिल है।

2. अर्थात उन काफिरों के लायक़ यही था कि अल्लाह की मस्जिदों में भय, अदब व सम्मान के साथ दाखिल होते, काफिरों ने वहां की बेहुरमती (अपमान) की, ये खुला अत्याचार है। या ये तात्पर्य है कि उस देश में हुकूमत और सम्मान के साथ रहने लायक़ नहीं। अतः यही हुआ कि शाम (सीरिया) और मक्का अल्लाह ने मुसलमानों को दिलवा दिया।

3. अर्थात दुनिया में पराजित हुए, कैद हुए और मुसलमानों के गुलाम हुए।

4. ये भी यहूदियों और ईसाइयों का झगड़ा था कि हर कोई अपने किब्लों (उपासना दिशा) को बेहतर बताता था, अल्लाह ने कहा "अल्लाह विशेष रूप से किसी ओर नहीं बल्कि तमाम मकान और जिहत से मुनज़्ज़ह है, अल्बत्ता उसके आदेश से जिस ओर मुंह करोगे वह मुतवज्जह है, तुम्हारी इबादत कुबूल करेगा"। कुछ ने कहा कि सफर में सवारी पर नफ्लें पढ़ने की बाबत ये आयत उतरी या सफर में किब्ला संदिग्ध हो गया था जब उतरी।"

5. अर्थात उसकी रहमत सब जगह आम है, एक मकान के साथ विशेष नहीं और बन्दों की नीयतों और उनके कर्मों को अच्छी तरह जानता है।

❖❖❖

# प्यारे नबी की प्यारी बातें

## नमाज़ की प्रधानता (फ़ज़ीलत)

—अमतुल्लाह तस्नीम

**क़ुर्आनः-**

"बेशक नमाज़ निर्लज्जता (बेहयाई) और बुरी बातों से रोकती है"।

(सूरः अनकबूत)

**हदीसः-**

**पांचों नमाज़ की मिसाल**

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा, भला ये बताओ यदि किसी के दरवाज़े पर नहर हो और वह प्रतिदिन पांच बार उसमें नहाता हो तो क्या उसके शरीर पर मैल–कुचैल बचा रहेगा। लोगों ने कहा, बिल्कुल नहीं। आपने कहा, यही मिसाल पांच नमाज़ों की है उसके ज़रिए तमाम खताएं मिट जाती हैं।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत जाबिर रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि पांचों नमाज़ की मिसाल जारी होने वाली नहर की सी है कि किसी के दरवाज़े पर हो और वह उसमें रोज़ाना पांच बार नहाता हो।

(मुस्लिम)

**नमाज़ कफ्फ़ारा (प्रायश्चित) है**

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि0 कहते हैं कि एक आदमी ने एक औरत को चूम लिया, फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में हाजिर हुआ और आपको इसकी सूचना दी। अल्लाह ने एक आयत नाज़िल की जिसका अनुवाद ये है कि "दिन के दोनों ओर और रात के कुछ घण्टों (साअतों) में नमाज़ कायम करो कि नेकियां बुराइयों को दूर करती हैं"।

उस आदमी ने कहा कि क्या ये केवल मेरे लिए है। आपने कहा, ये मेरी उम्मत के लिए है। (बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि पांच वक्त की नमाज़ें, एक जुमा से दूसरे जुमा तक उनके बीच के गुनाहों का कफ्फ़ारा (प्रायश्चित) है जबकि कबाइर न किये जाएं, अर्थात बड़े गुनाह से बचा रहे, तो ये सगाइर गुनाह (छोटे गुनाह) का कफ्फ़ारा हो जाता है। (मुस्लिम)

❖❖❖

**ऐतिदाल व मेयानारवी .....**

अल्लाह तआला हमारे और आपके लिए क़ुर्आन करीम में मौजूद बरकतों के हासिल करने को आसान बनाए, और हमें और आप को इस से फाएदा पहुंचाए। मैं अपने लिए और तमाम मुसलमानों के लिए अल्लाह तआला से इस्तेगफ़ार करता हूँ। आप भी इस्तेग़फ़ार कीजिए, क्योंकि वह मग़फिरत फरमाने वाला और रहम करने वाला है।

❖❖❖

# -दुरूद व सलाम-

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

बेशक अल्लाह तआ़ला और उसके फरिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो! तुम भी उन पर (नबी पर) दुरूद भेजा करो और खूब खूब सलाम भेजा करो।

(कुर्आन 33:56)

ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फरमा प्यारे नबी पर और बहुत—बहुत तेरा सलाम हो उन पर और उनकी आल पर और उनके अस्हाब पर।

ऊपर जिस आयत का अनुवाद पेश किया गया है, उस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दूरूद व सलाम भेजने का हुक्म है, लिहाज़ा जब भी यह आयत पढ़ी जाए या इस का तर्जुमा पढ़ा जाए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़ना ज़रूरी हो जाएगा। दुरूद अगर अरबी के बजाए उर्दू या किसी भी ज़बान में भेजें तो रहमत और सलाम के अरबी अलफ़ाज़ लाने का एहतिमाम करें, अगर इन दोनों अलफ़ाज के तर्जुमे (अनुवाद) लाएं तो तर्जुमे के साथ रहमत और सलाम के अलफाज़ भी लाएं, इसी तरह अल्लाह के बदले गॉड या ईश्वर पर बस न करें साथ में अल्लाह भी लाएं। जैसे "हे ईश्वर (हे अल्लाह) मुहम्मद पर अपनी कृपा कर (रहमत उतार) और उनकी रक्षा कर (उनपर अपनी सलामती उतार) ज़बान से कहने में इस तरह कहें, लिखने में ईश्वर के बाद अल्लाह, कृपा या दया के बाद रहमत, सुरक्षा या रक्षा के बाद सलामती ब्रेकट में लिख देना काफी होगा।

एक हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक रोज़ जब मस्जिद के मिम्बर पर खुत्बा देने को चढ़े तो पहले, फिर दूसरे फिर तीसरे ज़ीने पर कदम रखते वक्त तीनों बार आमीन कही, ख़ुत्बे के बाद सहाबा रज़ि0 के पूछने पर आपने बताया कि पहले ज़ीने पर कदम रखते वक्त जिब्रील आए और कहा कि बुरा हो उस शख़्स का जो अपने माँ—बाप को पाये और उनकी खिदमात से अपनी बख़्शिश का सामान न करले तो मैंने आमीन कही, दूसरे ज़ीने पर कदम रखते वक्त उन्होंने कहा, बुरा हो उस शख़्स का जो रमज़ान का महीना पाए और (इबादत वगैरह से) अपनी बख़्शिश का सामान न करले, मैंने आमीन कही, फिर तीसरे ज़ीने पर कदम रखते वक्त उन्होंने कहा बुरा हो उसका जिसके सामने आप (मुहम्मद) का नाम आए और वह दुरूद न पढ़े, मैंने आमीन कही, (बैहक़ी—शोअ़बुल ईमान)। इस हदीस और दूसरी कई अहादीस से यह मसअ़ला बना कि जब भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम सुना, पढ़ा या लिखा जाय तो दुरूद शरीफ़ का पढ़ना वाजिब हो जाता है। यह वजूब मुक़य्यद हुआ। नामे नामी सुनने, लिखने और पढ़ने पर।

अँगूठा चूमनाः— कुछ लोग अज़ान में आप का नामे मुबारक सुन कर अंगूठा चूमते हैं और इस सिलसिले में हदीस बयान करते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मरवी है कि जो शख्स हमारा नाम अज़ान में सुने और अपने अंगूठे आंखों पर रखे तो हम उसको कियामत की सफ़ों में तलाश करेंगे और उसको अपने पीछे पीछे जन्नत में ले जाएंगे। (तफ्सीर रूहुल बयान सूर—ए —माइदा आयत नं0 88 के तहत)।

आगे लिखते हैं कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह कहने के वक्त अपने अगूंठे के नाखूनों को मये कल्मे की उंगली के चूमना ज़ईफ है।

**दूसरी रिवायतः** दैलमी ने फिरदौस में अबू बक्र रज़ि0 से रिवायत की कि उन्होंने जब मुअज्जिन का कौल अशहदुअन्न मुहम्मदर्रलूलुल्लाह सुना तो उसे दोहराया और जब दोबारा सुना तो अपने कल्मे की उंगली के अन्दर के हिस्से को चूमा और आंखों से लगाया, मस हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो शख्स मेरे इस प्यारे की तरह करे उसके लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई आगे लिखा कि यह हदीस पाए—ए—सिहत तक न पहुंची।

इस तरह की कई रिवायतें "जाअल हक्क" पे नक्ल की गई हैं और खुद ही माना है कि यह सब रिवायतें ज़ईफ हैं, मगर जईफ हदीस पर अमल जाइज़ है।

हज़रत मौलाना अब्दुशशकूर रह0 ने इलमुलफ़िक़्ह जिल्द 2 के पृष्ठ 25 पर जामिउर्रमूज़ के हवाले से लिखा है कि मुअज्ज़िन जब अज़ान में पहली बार हुजूर का नाम ले तो सुनने वाला कहे सल्लल्लाहु अलैक या रसूलल्लाह और दूसरी बार नाम ले तो दोनों अंगूठों के नाखून आंखों पर रखे और कहे 'कुर्रतु ऐनी बिक़ या रसूलल्लाह अल्ला हुम्मा मत्तेअनी बिस्सिमअि वल बसर इसको मुस्तहब लिखा है लेकिन पृष्ठ 30 पर अंगूठे चूमने के सिलसिले में लिखा है "बाज अहादीस इस मजमून की आई हैं कि अज़ान में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे गिरामी सुन कर अंगूठों को चूमना चाहिए मगर कोई हदीस उनमें बड़े मुहद्दिसीन के नज़दीक सिहत को नहीं पहुंची सब जईफ हैं, हाँ जईफ हदीसों पर अमल जाइज़ है इस शर्त के साथ कि इस अमल के सुन्नत होने का ख्याल न किया जाए और उस को कोई ज़रूरी चीज़ न समझें। हमारे ज़माने में इफरात व तफरीत (घटाना बढ़ाना) की हद हो गई है अज़ान में अंगूठे चूमने का इस कदर रिवाज है कि कुछ लोग उस को सुन्नत समझते हैं, मुल्क के दक्खिनी इलाकों में कुछ को उसके वाजिब होने का ख़्याल है अगर कोई न चूमे तो उस पर लानत मलामत की जाती है लिहाजा ऐसी हालत में उसका तर्क करना बेहतर है" वल्लाहु आलम।

यह तर्क नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत व इताअत में है कि जिस चीज़ को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दीन में दाखिल न किया उसको हम दीन में कैसे दाखिल कर सकते हैं।

कुछ उलमा यह देख कर कि एक–एक मुस्तहब या मुबाह अमल के न करने पर लानत मलामत की जाती है उसके तर्क को बेहतर बताते हैं तो कुछ उलमा अवाम को यह बताते हैं कि यह तर्क मआ़ज़ अल्लाह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अदावत के सबब है, अस्तग फिरूल्लाह। कोई नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अदावत रख कर मुसलमान कैसे रह सकता है? जो नमाज़ों में दुरूद पढ़े, आपका नामे नामी पढ़ने और सुनने पर दुरूद का एहतिमाम करे सिर्फ सुबूत न होने के सबब अंगूठे चूमने से गुरेज़ करे उसको बुरा समझना बड़ा गुनाह है।

नमाज़ में अत्तहियात में जो सलाम पढ़ते हैं वह वाजिब है, नमाज़ के आखिरी क़ादे में जो दुरूद पढ़ते हैं वह सुन्नते मुअक्किदा है, नामे गिरामी सुनकर, या पढ़कर या लिख कर जो दुरूद पढ़ते या लिख लेते हैं वह वाजिब है, लेकिन शुरु में जो आयते करीमा लिखी गई वह मुकय्यद नहीं मुतलक है, इसलिए हम को चाहिए कि इस आयत के हुक्म की तामील में अलग से कुछ दुरूद व सलाम का वक्त निकालें, आयत में सल्लिमू तस्लीमा आया है जिसमें सलाम की कसरत का भी इशारा मिलता है, लिहाज़ा हमको चाहिए कि दुरूद व सलाम की कसरत का एहतिमाम करें अगरचि कुछ दुरूद व सलाम पढ़ने से आयत के हुक्म की अदायगी हो जाएगी लेकिन दुरूद व सलाम की कसरत इमकान भर बेहतर है।

कुछ लोग अब मस्जिदों में लॉउडस्पीकर पर दुरूद व सलाम पर मबनी अशआर पढ़ते हैं और उनका ख़्याल है कि वह आयत के मुतलक़ हुक्म की तामील में ऐसा कर रहे हैं, हमारे बचपन में जिला बाराबंकी और जिला लखनऊ की किसी मस्जिद में इस तरह अशआर पढ़ने का मामूल न था, कुछ लोगों को महसूस हुआ कि यह बिदअत है और इसे रोकने की कोशिश की, बड़ा नाजुक मसअ़ला बन गया, पढ़ने वालों ने कहना शुरु किया कि यह रोकने वाले लोग दुरूद व सलाम और नअ़त ख़्वानी से रोकते हैं, यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नहीं मानते बल्कि उनके मुखालिफ हैं। हालांकि वह बेचारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत और इताअ़त ही में ऐसा करते हैं, उनको भी रोकने में बहुत हिकमत से काम लेना चाहिए और समझा कर कहना चाहिए कि दुरूद व सलाम पढ़ना तो ईमान का हिस्सा और ईमान का तकाज़ा है। हम दुरूद व सलाम पढ़ते हैं और पढ़ने की दावत देते हैं मगर लॉउड स्पीकर पर मामूल बना कर पढ़ने को दीन में नई बात समझते हुए उससे बचते और बचाते हैं, अल्लाह तआला तौफीक़ दे दुरूद व सलाम की खूब कसरत करो, कभी कभार लॉउडस्पीकर पर भी पढ़ लो मगर इसका मामूल न बनाओ, और इसमें भी कोई हरज नहीं कि हम बताएं कि हम रोज़ाना इतनी तादाद में

शेष पृष्ठ.....20 पर

# जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

**बनू क़ीनकाअ़ का मामला –**

बनू क़ीनक़ाअ एक यहूदी क़बीला था, उससे और दूसरे यहूदी कबाएल से शुरु ही में पारम्परिक शान्ति समझौता हो गया था, बनू क़ीनकाअ के एक ज़ेवर के ताजिर ने एक मुसलमान औरत के साथ गंदा मज़ाक किया कि उसको खुलेआम बाज़ार में नंगा कर दिया और मज़ाक उड़ाया, उसने मुसलमानों की दुहाई दी और मुसलमान जमा हो गये और वह यहूदी मारा गया, इस पर दूसरे यहूदी आ गये और उन्होंने जवाबन मुसलमान को क़त्ल कर दिया, हंगामे की खबर सुन कर हूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाये और बनू क़ीनकाअ़ की बद अहदी पर उनके किले का घेराव किया यहां तक बनू क़ीनकाअ़ को झुकना पड़ा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फैसले पर तैयार हो गये। आपने उनको मदीना छोड़ने का हुक्म दिया और वह उसके मुताबिक मदीना छोड़ कर ख़ैबर चले गये[1] और इस तरह मुसलमानों को इस कबीले के फित्नों से नजात मिली।

**उहद (शव्वाल सन् 3 हिजरी)–**

बदर की जंग के बाद कुरैश के काफ़िरों का गुस्सा और अदावत बहुत बढ़ गया और बदले की भावना पैदा हो गई और यह कहलाया कि बदर की हार का बदला जरूर लेंगे। चुनांचे महीनों तैयारी करने के बाद जंगे बदर के दूसरे साल ही अपने कुर्ब व जवार के कबाएल को अपना हामी बना कर तीन हज़ार की फौज के साथ रवाना हुए और मदीने मुनव्वरा पर हमला आवर हुए, जब वह मदीने के क़रीबी इलाक़े में आ गये तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनके आने की ख़बर मिली, आपने अपने सहाबा से मशविरा फरमाया कि मदीने से निकल कर मुकाबला किया जाये या मदीने में रहते हुए मुकाबला किया जाये, खुद आपका रुझान मदीना में रहते हुए मुक़ाबला करने का था और कई सहाबा का भी यही रुझान था[1], लेकिन बाज़ दूसरे सहाबा जिनमें जोश ज़्यादा था वह मदीने से निकल कर दुश्मन के पड़ाव पर जा कर जंग करने को बेहतर क़रार दे रहे थे और उन्होंने ज़ोर देते हुए यही राय दी।

चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक हज़ार मुजाहिदीन को लेकर मुकामे उहद की तरफ तशरीफ ले चले जो मदीने के मुज़ाफ़ात में बीच शहर से सिर्फ तीन किलो मीटर के फासले पर है। दुश्मन की फौजों ने वहां जमाव किया था, और मदीने शहर के सामने वही खुली हुई जगह थी और पहाड़ के सामने मैदान में भी थी। उन एक हज़ार आदमियों में वह अफ़राद भी थे जिनकी राय

1. सीरत इब्ने हिशाम 2/47–49

1. सीरत इब्ने हिशाम 2/63

मदीना शहर के अन्दर रह कर मुक़ाबला करने की थी और बाज़ कुछ कमज़ोर तबियत और मुनाफ़िक़ीन भी थे जो अगरचे हालात के दबाव से शरीक तो हो गये थे लेकिन फिर सूरते हाल का अंदाज़ा लगाते हुए उन्होंने रास्ते ही में ऐतराज़ उठा दिया कि जंग करने में हलाकत की बात ज़्यादा है, उन्होंने रास्ते ही में यह मामला खड़ा करके दूसरों को भी अपना हमख्याल बनाने की कोशिश की और कहा कि बाहर निकल कर जंग करने का यह फैसला नुक़सानदेह है और बिला वजह अपने को ख़तरे में डालने का है, इन बातों से 300 अफ़राद मुतअस्सिर हो गये और यह सब कुछ न कुछ उज़्र बयान करके रास्ते से वापस हो गये, जिसकी वजह से मुसलमानों की ताक़त कमज़ोर हो गई, चुनांचे 700 आदमियों को तीन हज़ार आदमियों के मुकाबले में आना हुआ जिससे दुश्वारी का सामना हुआ, पहले वहले में कामयाबी हुई, फिर पहाड़ी पर बैठाये हुए मुसलमानों के दस्ते की एक ग़लती की बिना पर कुरैश की फौज ने एक नई हिकमते अमली (कूटनीति) अचानक इख़्तियार की, इससे मुसलमान मुजाहिदीन में अचानक कमज़ोरी पैदा हो गई और जीत के बजाए हार की सूरतेहाल बनने लगी[1], लेकिन हुजूर सय्यदिना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमान मुजाहिदीन को फिर से ललकारा और वह सब फिर से इकट्ठा हो गये इससे कुरैश फौजियों ने पसपाई इख़्तियार की, मगर यह कहते हुए वापस गये कि हम फिर आकर इससे बड़ी ताक़त के साथ मुकाबला करेंगे।

इस मअ़रके में मुसलमानों को बड़े सब्र आज़मा हालात से गुज़रना पड़ा, इसमें दर्मियानी शिकस्त के मौक़े पर यह अफवाह फैला दी गयी थी कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नहीं रहे और शहीद हो गए, जबकि खबर गलत थी[2] अलबत्ता एक हमले से ऐसा हुआ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुंह पर चोट आई और आपके दनदाने मुबारक शहीद हुए, अचानक हमले से कई सहाबा शहीद हुए उनमें हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा सय्यदुश शोहदा हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब[1] और मुअल्लिमे सहाबा हज़रत मुसअब बिन उमैर[2] और बाज़ दूसरे बड़े सहाबा थे, लेकिन आखिरकार कुफ़्फ़ार ने पसपाई इख़्तियार की और मुसलमानों को फ़तह हुई, लेकिन ज़्यादा कुर्बानी देनी पड़ी।

उहद का वाक़िया मुसलमानों के लिए एक बड़ा सबक़ भी साबित हुआ। इस सबक़ को कुर्आन मजीद में भी मुसलमानों के सामने ज़ाहिर किया गया है कि उनसे जो कमज़ोरियाँ हुई हैं जो उनके ताकतवर ईमान होने की सूरत में नहीं होनी चाहिए थीं, उनकी तरफ़ मुतवज्जेह हो क्योंकि दर्मियानी शिकस्त का असल सबब वही

1. सीरत इब्ने हिशाम 2/64, अलबिदाया वन-निहाया 4/13, अल कामिल फित्तारीख 2/150
2. अल-कामिल फित्तारीख़ 2/155-156

1. सही बुख़ारी गुज़व-ए-उहद बाब क़त्ले हमज़ा रज़ि0, सीरते हलबिया 2/72
2. जादुल मआद 3/197, सीरत इब्ने हिशाम 2/73

कमज़ोरियाँ हैं इन कमज़ोरियों में जो असल कमज़ोरी थी वह यह थी कि मैदाने जंग और मदीना शहर के दर्मियान एक खुश्क नाला था, जिसका एक सिरा कुफ़्फ़ार की फ़ौज़ों के मुक़ाम तक था, उस नाले के मैदाने जंग के रुख़ वाले किनारे पर एक टीला था, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसपर तीरअंदाज़ों पर मुशतमिल एक फ़ौजी दस्ता बैठा दिया था कि कुफ़्फ़ार उस नाले से अन्दर अन्दर जाकर मुसलमानों पर पीछे से आकर हमला न कर दें, जंग में अव्वला अव्वल जब कुफ़्फ़ार को शिकस्त हुई और वह भागने लगे तो मुसलमान फ़ौजी दस्ते के अक्सर अफ़राद यह समझ कर नीचे उतर आये कि अब कुफ़्फ़ार भाग रहे हैं, अब ऊपर बैठे रहने की ज़रूरत नहीं, कुफ़्फ़ार का माले ग़नीमत जो मुसलमान जमा कर रहे हैं उसमें शरीक हो जाने में कोई हर्ज नहीं, लेकिन उनका ख़्याल ग़लत निकला और कुफ़्फ़ार ने टीले पर मुसलमानों को न देख कर अपनी एक टुकड़ी को नाले के ज़रिये फौरन जा कर मुसलमानों के पीछे से हमला करने के लिए भेज दिया, जिसके अचानक हमले से मुसलमानों में अफरा तफरी हो गई और मुश्किल से उनको थामा जा सका, इसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शहादत की अफवाह ने भी अफरा तफरी फैलाई, बहरहाल अल्लाह तआला की तरफ से मुसलमानों को उनकी कोताहियों की तरफ तवज्जो दिलाई गई फरमायाः—

"और खुदा ने अपना वादा सच कर दिखाया यानी उस वक्त जबकि तुम काफिरों को उसके हुक्म से क़त्ल कर रहे थे यहां तक कि जो तुम चाहते थे, खुदा ने तुमको वह दिखा दिया, लेकिन उसके बाद जब तुमने हिम्मत हार दी और हुक्म (पैग़म्बर) में झगड़ा करने लगे और उसकी नाफरमानी की, कुछ तो तुम में से दुनिया के तलबगार थे (यह इशारा माले गनीमत जमा करने की तरफ़ तवज्जो करने की तरफ़ बताया जाता है) कुछ आखिरत के तालिब थे उस वक्त तुम को उनके मुकाबले से फेर कर हटा दिया ताकि तुम्हारी आज़माईश करे और अब उसने तुम्हारा कुसूर मआफ कर दिया है, और खुदा मोमिनों पर बड़ा फज़्ल करने वाला है।"

(सूरः आले इमरानः152)

बहरहाल टीले पर बिठाए गए तीर अन्दाज़ों की कोताही से मुसलमानों को जो ख़ामियाज़ा भुगतना पड़ा, उसने मुसलमानों को आइन्दा के लिए ख़बरदार कर दिया और यह बात भी अपनी जगह पूरे तौर से सामने आ गई कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्मों पर चलना ही कामयाबी की कुंजी है।

कुरैश का उहद के वाक़िए से एक हद तक दिल ठण्डा हुआ, हालांकि इसमें भी उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ा मगर बदर के मुकाबले में वह इसको फतह समझ रहे थे चुनांचे सरदारे कुरैश अबु सुफियान जिनकी सरदारी व रहनुमाई में दुश्मन जमा हुए थे मकामे उहद से यह सब दुश्मन वापस होने लगे तो बुलन्द आवाज़ में यह नारा लगाने लगे कि "जंग का मामला बराबर—बराबर रहा, आज उसकी फतह कल उसकी,

शेष पृष्ठ..... 36 पर

—देवनागरी लिपि में उर्दू

# ज़ुह्रे क़ुदसी

—अल्लामा सै0 सुलैमान नदवी रह0

## (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पवित्र जन्म)

**चमनिस्ताने दहर में बारा रूह पर वर बहारें आ चुकी हैं, चर्ख़े नादिरे कार ने कभी-कभी बज़्मे आलम इस सरो सामान से सजाई कि निगाहें ख़ीरह हो कर रह गई हैं।**

**विलादत (पैदाइश)**- लेकिन आज की तारीख़ वह तारीख़ है, जिसके इन्तिज़ार में पीरेकुहन साले दहर ने करोड़ों बरस सर्फ़ कर दिये सय्यारगाने फ़लक इसी दिन के शौक़ में अज़ल से चश्मे बराह थे, चर्खे कुहन मुद्दत हाए दराज़ से इसी सुबहे जाँनवाज़ के लिए लैलो नहार की करवटें बदल रहा था, कारकुनाने कज़ा क़द्र की बज़्मे आराइयाँ, अनासिर की जिद्दत तराज़ियाँ, माहो ख़ुर्शीद की फ़रोग़ अंगेज़ियाँ, अबरो बाद की तरदसतियाँ आलमे कुद्स के अनफ़ासे पाक, तौहीदे इब्राहीम, जमाले युसुफ़, मुअजिज़ तराज़िये मूसा, जाँनवाज़िये मसीह, सब इसीलिए थे कि यह मता अहाएगिराँ अर्ज़ शहनशाहे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरबार में काम आएंगे।

आज की सुब्ह वही सुब्हे जाँनवाज़, वही साअते हुमायूँ वही दौरे फ़र्रुख़ फाल है, अरबाबे सियर अपने महदूद पैरा-ए-बयान में लिखते हैं कि "आज की रात ऐवाने किसरा के 14 कंगूरे गिर गये, अतिशकद-ए-फ़ारस बुझ गया, दरयाएसावह ख़ुश्क हो गया, लेकिन सच यह है कि ऐवाने किसरा नहीं बल्कि शाने अजम, शौकते रूम औजे चीन के क़स्रेहाए फ़लक बोस गिर पड़े, आतिशेफ़ारस नहीं बल्कि जहीमेशर, आतिशकद-ए-कुफ़्र आज़रकद-ए-गुमराही सर्द होकर रह गये, सनम ख़ानों में खाक उड़ने लगी, बुतकदे ख़ाक में मिल गये, शीराज़-ए-मजूसियत बिखर गया, नसरानियत के औराक़े ख़जांदीदह एक एक करके झड़ गये।

तौहीद का गुलगुला उठा, चमनिस्ताने सआदत में बहार आ गई, आफ़ताबे हिदायत की शुआएं हर तरफ़ फैल गई, अख़लाक़े इनसानी का आइना परतवेकुद्स से चमक उठा।

यानी यतीम अब्दुल्लाह, जिगर गोश-ए-आमिना शाहे हरम, हुकमराने अरब, फ़रमां रवाए आलम शहनशाहे कोनैन, आलमे कुद्स के आलमे इमकान में तशरीफ़ फ़रमाए इज़्ज़तो इजलाल हुआ, अल्लाहुम्मा सल्ले अलैहे वआ़ला आलिही व असहाबिही व सल्लम, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत (पैदाइश) तहक़ीक़ के मुताबिक़ 9, रबीउलअव्वल रोज़े दोशम्बा मुताबिक़ 20 अप्रैल सन् 571 ई0 में हुई थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम "मुहम्मद" रखा गया और आम तौर पर बयान किया जाता है कि अब्दुलमुत्तलिब ने यह नाम रखा था, सबसे पहले आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपकी

शेष पृष्ठ..... 20 पर

# अ़कीद-ए-रिसालत

—हिन्दी लिपिः फ़ौज़िया सिद्दीक़ा फ़ाज़िला

—मौलाना अब्दुश्शकूर फारूक़ी रह0

हक़ीक़त में अगर ग़ौर किया जाए तो यह अक़ीदा, अकीद—ए—तौहीद से ज़्यादा मुहतमबिश्शान (भव्य) अम्बिया अ0 की तअ़लीम से अक़ीद—ए—तौहीद पूरे तौर पर मालूम होता है।

हमारा ईमान है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने कुछ खास बन्दों को हिदायते ख़ल्क़ के लिए मुक़र्रर फ़रमाया, ख़ुदा का कलाम उन पर उतरता था और ख़ुदा उनके ज़रिए से अपने अहकाम बन्दों को भेजता था। उन मख़्सूस व मुक़र्रब बन्दों को ख़ुदा का नबी व रसूल कहते हैं, उनमें सबसे पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं, उनके और हमारे सरदार और सारी क़ाएनात के सरदार हज़रत मुहम्मद तुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, नबियों की तादाद शरीअत ने नहीं बतलाई लिहाज़ा कोई अददे ख़ास मुअ़य्यन न करना चाहिए, नबियों के मुतअल्लिक़ हमारे अक़ीदे यह हैं—

1. वह सब रास्त बाज़ और नेकूकार और सगीरा—कबीरा हर किस्म के गुनाहों से पाक थे, सब अल्लाह की रज़ामन्दी और पसन्द के कामिल नमूने थे।

2. अहकामे इलाही के पहुंचाने में कोताही न करते थे, दुनिया की कोई ताक़त उनको उनके फर्ज़े मन्सबी से रोक नहीं सकती।

3. उन्होंने मोजिज़ात दिखाये, यानी वह काम उनसे ज़ाहिर हुए जो इन्सानी ताक़त से बालातर हैं, जैसे लाठी का अज़दहा बन जाना, मुर्दे का जी उठना, पत्थरों और दरख़्तों का इन्सानी ज़बान में कलाम करना, चाँद का दो टुकड़े हो जाना वगैरह—वगैरह ।

4. अल्लाह तआला नबियों को बक़द्र ज़रूरत व मस्लिहत ग़ैब की बातों पर भी इत्तिलाअ़ देता है, मगर तमाम ग़ैब की बातों का जानना और हर जगह हाज़िर व नाज़िर होना अल्लाह तआ़ला की ख़ास सिफ़त है।

5. जो नबी जिस ज़माने में थे उस ज़माने में उनकी क़ौम के लिए ख़ुदा की रज़ामन्दी उनकी पैरवी व फरमा बरदारी में मुन्हसिर होती थी।

6. कोई नबी अपनी नुबूवत से कभी मअ़जूल (पदच्युत) नहीं हुए।

7. कोई ग़ैर नबी किसी नबी के बराबर नहीं हो सकता।

8. सब नबियों से अफ़ज़ल हमारे नबी रऊफ़ व रहीम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

9. आप अल्लाह के नबी हैं, आप ख़ातमुन्नबीय्यीन हैं, यानी आप पर नुबूव्वत ख़त्म हो गई, आपके बाद किसी को नुबूव्वत नहीं मिली न मिलेगी, (न उम्मती, न ज़िल्ली, न बुरूज़ी) आपने ब कसरत मुअ़जिज़ात दिखलाए, आपकी नुबूव्वत तमाम जहां के लिए है आपको अल्लाह तआ़ला ने दीने कामिल अता फरमाया, आपको हक़

तआ़ला ने मेराज दी यानी एक रात जागने की हालत में बुर्राक़ पर सवार हो कर मक्का से बैतुल मुक़द्दस और बैतुलमुक़द्दस से आसमानों पर तशरीफ़ ले गए, फिर आगे जहां तक अल्लाह ने चाहा आपको सैर कराई गई, जन्नत दिखलाई गई, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गुनहगारों को बख़्शवाने वाले हैं, क़यामत के दिन सबसे पहले आप बाइज़्ने इलाही अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त करेंगे, और आप की शफ़ाअ़त मक़बूल होगी। आपको ख़ुदा ने हौज़े कौसर इनायत फ़रमाया, आपकी उम्मत भी तमाम उम्मतों से और आपके असहाब सब नबियों के असहाब से अफ़ज़ल हैं।

10. आपके तशरीफ़ लाने के बाद अब किसी दूसरी शरीअ़त पर अमल करने वाला नजात नहीं पा सकता।

11. अल्लाह तआला ने अपने बाज़ नबियों पर किताबें भी उतारी हैं जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरेत और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर इन्जील और हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कुर्आन मजीद।

12. कुर्आन मजीद अल्लाह की किताबों में सबसे अफ़ज़ल है और हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सबसे बड़ा मुअ़जिज़ा है।

13. कुर्आन मजीद की हिफ़ाज़त का ख़ुदा ने ख़ुद वादा फ़रमाया है और इस वाद–ए–इलाही के मुताबिक़ वह बड़ी हिफ़ाज़त के साथ मौजूद है और क़यामत तक रहेगा। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद उसमें एक हरफ़ की कमी–बेशी तग़य्युर व तबद्दुल नहीं हुआ, उसकी तरतीब लौहे महफ़ूज़ के मुताबिक़ है।

14. कोई आक़िल–बालिग़ इस रुतबे को नहीं पहुंच सकता कि पाबंदिये शरीअ़त और पैरवीये पैग़म्बर इससे मआ़फ़ हो जाये।

**फ़रिश्तों का बयान–**

अल्लाह तआ़ला की एक ख़ास क़िस्म की मख़लूक है उसको फरिश्ता कहते हैं, फरिश्ते न मर्द हैं न औरतें, न खाते हैं न पीते हैं, खाने पीने से जो चीज़ें पैदा होती हैं जैसे पाख़ाना–पेशाब वग़ैरह उनसे भी पाक हैं। फरिश्तें गुनाहों से मासूम हैं, फरिश्तों की तादाद बहुत है, सिवा अल्लाह के किसी को इनकी तादाद मालूम नहीं।

फरिश्तों को अल्लाह तआला ने कामों पर मुक़र्रर किया है, बाज़ को अल्लाह तआला ने हवा पर मुक़र्रर किया है, बाज़ को पानी पर बाज़ को जान निकालने पर, बाज़ को इन्सानों के आमाल लिखने पर।

फरिश्तों में इन चार फरिश्तों का रुत्बा बहुत बड़ा है– जिब्रील, मीकाईल, इस्राफील, और इज़्राईल अ0। हज़रत जिब्रील अ0 पैगम्बरों के पास वही लाने पर मुक़र्रर थे और हज़रत मीकाईल अ0 रोज़ी रसानी पर, हज़रत इस्राफील अ0 कियामत के दिन सूर फूँकने पर और हज़रत इज़्राईल अ0 जान निकालने पर।

(नफ़ह–ए–अंबरीया ब ज़िक्रे मीलाद ख़ैरुलबरीया से ग्रहीत)

❖❖❖

–देवनागरी लिपि में उर्दू

# हदीसे जिब्रील का उर्दू पद्य में सारांश

नोटः इस हदीसे पाक को हदीसे जिब्रील इसलिए कहा जाता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत जिब्रील अ0 के सवालों के जवाबात दिये हैं।

हजरत नबीये पाक सहाबा के बीच में
बैठे हुए थे आप वहां फिक्रे दीन में
इक अजनबी ने आ के नबी से किया सुवाल
इस्लाम क्या है आप बताएं मुझे फिलहाल
उसके जवाब में वहीं बोले रसूले पाक
गर चाहते हो जानना पढ़ लो हदीसे पाक
अल्लाह के सिवा कोई मसजूद नहीं है
दे तू गवाही दिल से कि मअ़बूद वही है
काइम करे नमाज़ अदा तू करे ज़कात
रमजान के रोजे रहे तू जान ले ये बात
हज फर्ज है एक उम्र में रखता हो जो कुदरत
उसने जो की तस्दीक थी अस्हाब को हैरत
ईमान क्या है उसने किया दूसरा सुवाल
फौरन दिया जवाब नबी ने बे क़ील व क़ाल
ईमान हो अल्लाह पर उसके फिरिश्तों पर
उसकी किताबों पर भी और उसके रसूलों पर
दिन पर कियामत के और तक्दीर पर उसकी
अच्छी बुरी तक़्दीर सब अल्लाह ने लिखी
एहसान क्या है उसका था अब तीसरा सुवाल
फौरन दिया जवाब नबी ने बे लैत व लाल
ऐसे इबादत कर कि रब को देख रहा है
गर ये नहीं तो वह तो तुझे देख रहा है
पूछा कियामत आएगी कब यह भी बताएं
बोले नबी इस इल्म को हम कैसे बताएं
अल्लाह ने इस इल्म को बस खास किया है
बन्दों को अपने इसका नहीं इल्म दिया है
फिर आपने बतलाईं कुछ आसारे कियामत
जाता रहा वह अजनबी फिर तो उसी साअत
फरमाया आपने कि वह जिब्रीले अमीं थे
तुमको सिखाने दीन वह तो आए यहां थे
रहमत नबीये पाक पर हो और हो सलाम
आखिर नबी हैं उनपे नुबूवत हुई तमाम

## चार इमामों की पैदाइश व वफ़ात

| नाम | पैदाइश का सन् | वफात का सन् |
|---|---|---|
| इमाम अबू हनीफा रह0 | 80 हिज्री | 150 हिज्री |
| इमाम मालिक रह0 | 95 हिज्री | 179 हिज्री |
| इमाम शाफई रह0 | 150 हिज्री | 204 हिज्री |
| इमाम अहमद रह0 | 164 हिज्री | 241 हिज्री |

# दावत का काम करने वाले उलमा से चन्द बातें

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी —अनु0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

## कुछ ध्यान देने योग्य बातें

कुछ बातें ऐसी हैं जिनकी ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, जिसके बिना आप कोई उत्कृष्ट कार्य नहीं कर सकते। पहली चीज़ ये है कि नीयत सही हो। हमको जो काम भी करना है अल्लाह के लिए करना है। बस यहीं आपके सारे मसले हल हो जाएंगे। क्योंकि आदमी बात करता है तो गुस्सा आता है, यदि अल्लाह के लिए करेंगे तो गुस्सा नहीं आएगा। और यदि आएगा भी तो समय पर आएगा और ज़रूरत के तहत आएगा, फिर तुरन्त ठण्डा हो जाएगा। जैसे सच्चा आदमी होता है। वह ये देखता है कि हमको रास्ता मिल जाए। वह ये नहीं देखता कि हम कामयाब हुए या नाकाम हुए। वह ऐसे ही है कि एक बच्चे के बारे में दो महिलाओं के बीच लड़ाई हुई। दोनों औरतों ने दावा किया कि ये हमारा बच्चा है। एक ने कहा कि हमारा। दूसरे ने भी कहा कि हमारा। मामले ने तूल पकड़ा। निर्णय हो नहीं पा रहा था। क़ाज़ी साहब हैरान थे। अल्लाह ने उन्हें असाधारण बुद्धि देकर बुद्धिमान बनाया था। तो उन्होंने कहा, बच्चे को लिटा कर बीच से काट दो, आधा एक को दे दो और आधा दूसरे को दे दो। जिसका असल में बच्चा था वह एक दम से चीख़ पड़ी और कहने लगी, नहीं—नहीं इसी को दे दीजिए। इसलिए कि उसके ज़ेहन में था कि उसका बच्चा किसी तरह से बच जाए। दूसरी ने कहा कि ठीक है इसको काट दीजिए। इसीलिए कि दूसरी वाली की नीयत अच्छी नहीं थी।

सामने वाला आपको गाली दे रहा है, अब यदि आप सच्चे हैं तो उसकी गाली से आप परेशान नहीं होंगे, न उसके बुरा—भला कहने से बुरा मानेंगे, बल्कि सब्र व सुकून के साथ जब वह सारी बातें कह चुके तो सिर्फ एक जुम्ला कहिए, भाई साहब! हमको आप और गाली दीजिए मगर इस्लाम को गाली न दीजिए। आपने कम गाली दी है और दे लीजिए। तो वह चौंक जाएगा कि ये क्या कह रहा है कि आप हमको गाली दे लीजिए मगर इस्लाम को न दीजिए। क्योंकि ये हमारी कोताही है कि हम आपको इस्लाम के बारे में नहीं समझा पा रहे हैं। बस वह ठण्डा हो जाएगा। अब आप शुरु हो जाइये। नहीं, भाई! देखिए इस्लाम ये है और ये है। जितनी आपके अन्दर तड़प होगी उतनी जल्दी फैसला हो जाएगा।

दूसरी चीज़ जिसका एहतेमाम ज़रूरी है वह है हलाल खाना। हलाल खाना बहुत असर डालता है। क्योंकि हराम खाने से ज़बान ख़राब हो जाती है, दिल खराब हो जाता है। दावत (इस्लामी निमंत्रण) के काम में हलाल रोटी बहुत ज़रूरी

है। इसमें आप अपने आपको जितना कर सकें करें, और कोताही न करें। और अभी से आप इसकी तैयारी करें कि हराम लुक्मा अन्दर न जाए। ये हमारे युनिवर्सिटी और दारुलउलूम के छात्रों में अन्तर है। जैसे कुर्आन की एक आयत का तात्पर्य है कि जंग होती है, तो तुम्हें भी तकलीफ होती है और उन्हें भी होती है लेकिन उनमें अंतर ये है कि तुम्हें अल्लाह से यकीन है जिसका उनको यक़ीन नहीं है। और तुम्हें वहां की बहुत उम्मीद और उन्हें यहीं की उम्मीद है। ऐसे ही हर जगह अंतर है। इसको आप याद रखिए कि आप स्टूडेण्ट नहीं हैं बल्कि आप तालिबे इल्म हैं। स्टूडेण्ट और तालिबे इल्म में बहुत अंतर होता है। स्टूडेण्ट वह होते हैं जो वहां दुनिया के लिए पढ़ते हैं। तालिबे इल्म वह होता है जैसा कि लफ़्ज़ से पता चल रहा है "तालिब" अर्थात उसके अन्दर तलब (इच्छा) हो इल्म की। और वह अल्लाह के लिए और उसको जानने–पहचानने के लिए पढ़े।

तो रोज़ी हलाल होनी चाहिए, फिर उसके बाद नफ़्सियात (मनोविज्ञान) का माहिर होना चाहिए और नफ़्सियात के माहिर हमारे अहले तसव्वुफ (सन्तवादी) रहे हैं। आप उनके उपदेश संग्रह यदि पढ़ कर देखें तो आपको अन्दाज़ा होगा। अल्लाह ने उनको ये दक्षता दी थी और उसी का दूसरा नाम फिरासत है। अर्थात वह नूर मिल जाए और कुर्आन नूर से भरा पड़ा है और शरहे सदर नूर से जुड़ा है। तो जब नूर होता है तो हर चीज़ खुद नज़र आ जाती है और वह नूर जिसको मिल जाएगा तो आपको ज़्यादा तलाश नहीं करनी पड़ेगी। अंधेरे में इन्सान को कोई चीज़ तलाश करनी पड़ती है तो इधर–उधर हाथ मारना पड़ता है, लेकिन जब रौशनी होती है तो हर चीज़ अपनी जगह पर नज़र आ जाती है। अल्लाह के ज़िक्र से नूर मिलता है वरना हृदय में कठोरता आ जाती है। जितनी ही ये चीज़ें हासिल हो जाएंगी उतनी ही असाधारण निः स्वार्थता मन में आती चली जाएगी और मनोविज्ञान के एक्सपर्ट होते चलें जाएंगे। हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 ने अपनी पुस्तक "दावत व तब्लीग का मोजिज़ाना उस्लूब" में बहुत ही महत्वपूर्ण बात लिखी है कि जब किसी के पास जाओ तो उसके दिल में दरवाज़े तलाश करो कि कौन सा दरवाज़ा खुला है, उससे दाखिल हो जाओ। उनके अन्दर जाकर ही दूसरे दरवाज़े खोल पाओगे और यदि बन्द दरवाज़े की ओर गए तो कोई भी दरवाज़ा खोल नहीं पाओगे। जैसे क्रिकेट के दीवाने लोग होते हैं और आजकल तो बहुत से नौजवान इसमें हैं। अब आप उनके पास निमंत्रण लेकर गए और आपने कहा, भाई! आओ चलो अल्लाह–अल्लाह करो। तो वह लोग कहेंगे कि अरे मियाँ जाओ, बाद में आना। लेकिन आप उनके पास गए और कहा कि मियाँ आओ बैठो, और आपने कहा कि वह मैच आपने देखा, कौन जीता? अब उसे वहां से घुमा कर ले जाएं। अब आप धीरे–धीरे दाखिल

हो जाएंगे और उसका दिल खुल जाएगा। इसलिए कुर्आन में आया है "वल् आदियाति ज़ब्हन" ये यूँ ही नहीं हैं बल्कि इसमें अरबों के मिजाज़ का ख़्याल रखा गया है। "वल् आदियात" अब इसमें घोड़ों के बारे में बताया गया कि घोड़े दौड़ रहे हैं, चिन्गारियाँ निकल रही हैं। अब अरबों को मज़ा आ गया, क्या कहना, इसमें तो घोड़े के बारे में कहा गया है। अब इसके आगे "इन्नलइन्सान" कह कर अल्लाह ने उनको अपनी बात पहुँचा दी। इस तरह की मिसालें बहुत हैं। ये यदि आप जानेंगे तो फिर काम बनेगा। अब यदि आप इस दरवाज़े से जाएंगे तो दरवाज़ा खुल जाएगा, और ये समझ लीजिए कि जब आप धार्मिक निमंत्रण (इस्लामी दावत) के लिए जाएंगे तो गुस्सा बांध कर और उसे घर में छोड़ कर जाएंगे। यदि कोई गुस्सा हो जाता है तो अपनी दावत में कभी कामयाब हो ही नहीं सकता। ये बिल्कुल नामुमकिन है, क्योंकि निमंत्रण और युक्ति एक दूसरे के पूरक हैं। युक्ति और क्रोध में विलोमता है। जिसको गुस्सा आएगा वह युक्तिवान नहीं हो सकता। समझदार आदमी को भेज दो, समझाने की ज़्यादा ज़रूरत नहीं है।

तीसरी चीज़ ये है कि काम का प्रचार और प्रोपेगण्डा न करें बल्कि गुप्त रखें। एक नव मुस्लिम हैं उन्होंने 25 वर्ष पहले इस्लाम धर्म स्वीकार किया। वह देहली में रहते हैं, उनका नाम आदिल है। वह हज़रत मौलाना से बैअत भी हैं, अल्लाह ने उनके माध्यम से बड़ा काम लिया है। कई बड़े अधिकारियों ने उनके हाथ पर इस्लाम कुबूल किया है। उन्होंने कई पुस्तकें भी लिखी हैं। अल्लाह ने अपने रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत कराई। अभी हाल में उनसे बात हुई है, उन्होंने जो बताया वह एक संदेश है और लतीफा भी। कहने लगे कि मैंने एक विचित्र सपना देखा है सत्तर साल हो गए, मैंने कभी ऐसा ख़्वाब नहीं देखा। मगर मैंने ख़्वाब देखा है जो आपको बता रहा हूँ कि दो गद्दे हैं, जो आलीशान हैं और एक दालान में एक ओर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं और दूसरी ओर मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 हैं। उस दालान में मैं दाखिल हुआ तो मौलाना अली मियाँ ने मेरा परिचय कराया कि ये फलाँ साहब हैं और नव मुस्लिम हैं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे देखा और कहा कि आप काम को और तेज़ की जिए और दाढ़ी मुण्डवा दीजिए। तो मैं दाढ़ी मुण्डवाने जा रहा हूँ। मैंने कहा, अरे भाई! अभी आप रुक जाइये और दाढ़ी मत मुण्डवाइये। ख़्वाब की ताबीर (स्वप्न फल) अलग होती है। मैंने उनसे कहा कि काम को और तेज़ कीजिए और दाढ़ी मुण्डवाने का तात्पर्य ये है कि काम का प्रचार न करें बल्कि काम खुफिया तौर पर करें। फिर मैंने ये ख़्वाब हज़रत मौलाना राबे हसनी नदवी साहब को

सुनाया तो आपने बड़ी ताईद (समर्थन) की और कहा कि तुमने बड़ी अच्छी ताबीर दी, वर्ना वह दाढ़ी मुण्डवा लेते, सारा काम ख़राब हो जाता। तो मैं भी चाहता हूँ कि इस काम को खुफिया रखा जाए। बहुत अधिक चर्चा न करें और लोगों से ज़्यादा न बताएं। इससे लोगों में ईर्ष्या पैदा होती है। कुछ लोग शोहरत चाहते हैं। किया तो कुछ भी नहीं और साहब अपनी शोहरत में काम बन्द करा डालेंगे। शोर खूब मचाया कि लाख हो गए, दस लाख हो गए और हुआ कुछ भी नहीं।

अभी मुझे एक पर्चा मिला है जिसमें ये लिखा है कि छः ईसाई और तीन मुसलामन हिन्दू हुए हैं और ये बातें पर्चे में छप रही हैं। उन्होंने भी मुसलमानों को हिन्दू बनाने का प्रयास शुरु कर दिया है और ये उसी का परिणाम है। इस काम को बिल्कुल अण्डरग्राउण्ड कीजिए और जब हमारी संख्या हो जाएगी तो खुद ही ज़ाहिर हो जाएगा। फिर कौन रोकेगा और कहां तक रोक सकेगा, लेकिन अपनी ओर से बिल्कुल हाइलाइट मत कीजिए और काम करते जाइये और जो भी मिलता जाए उसको बताते जाइये तथा उससे सम्बन्ध अवश्य जोड़े रखिए उसे तोड़िये नहीं। इसलिए कि वह तो आपका साथी हो गया और उसका हर मामला आपके साथ जुड़ा है। आप उसको परामर्श भी देंगे और सहायता भी। इसलिए सम्बन्ध भी मजबूत होने चाहिए।

ये कुछ ज़रूरी बातें थी, आप इसको याद रखें और अल्लाह का नाम लेकर काम शुरु कर दें तो इन्शाअल्लाह अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। ऐसा लगता है कि वह सब तैयार बैठे हैं, जिसको मैं कहा करता हूँ "वअन्ज़ल्नल हदीद"। कुर्आन में अल्लाह ने कहा कि "हमने लोहा नाज़िल किया"। लेकिन लोहा तो नीचे से निकलता है और अल्लाह ने कहा कि हमने उतारा। और अब रिसर्च से भी ये बात सामने आ गई है कि एक खास चीज़ ज़मीन से जज़्ब होती है और फिर अन्दर जाती है तो लोहा बन जाती है और वह "अन्ज़ल्ना" होती है। लेकिन अब तक लोग कहते जा रहे थे कि वह निकाला जाता है। इसी तरह हिदायत (मार्गदर्शन) भी है। ये भी "अन् ज़ल्ना) ही है। अल्लाह ऊपर से हिदायत नाज़िल करता है और वह दिल के अन्दर चली जाती है। यदि हिदायत जा चुकी है तो उसे आप खोद कर निकालें तो वह उसी का है। इसी तरह हिदायत भी है कि हिदायत अल्लाह ने नाज़िल कर दी, अब आपने खोद कर निकाल ली तो ये ख़ज़ाना आपका है। पवित्र हदीस में है "तुम्हारे द्वारा अल्लाह एक को भी सत्यमार्ग पर चला दे तो ये लाल ऊँटों से बेहतर है, अर्थात करोड़ों से"।

बस इन बातों को याद रखें, इन्शा अल्लाह बहुत फायदा होगा, अल्लाह हमें इसको करने का सामर्थ्य दे।

आमीन!

❖❖❖

# नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खुतूत बादशाहों के नाम

—हिन्दी लिपिः मन्ज़र सुब्हानी —हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0

इन सलातीन में जिनके नाम यह खुतूत रवाना किये गये, रूमी शहंशाह हिरक्ल, ईरानी शहंशाह किस्रा परवेज़, हब्शा के बादशाह नजाशी और मिस्र के बादशाह मक़ूक़स के नाम ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

हिरक्ल को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना मकतूब दहियतुल कल्बी के हाथ इरसाल फ़रमाया, इन्होंने "बुस्री" के रईस और सरदार के ज़रिए इस मकतूब गरागी को हिरक्ल तक भेजवाये इस मकतूब का मतन यह है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्र—हीम, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ से जो खुदा का बन्दा और रसूल है, यह ख़त हिरक्ल के नाम है जो रूम के रईसे आज़म हैं, इनको सलामती हो जो हिदायत का पैरू हो, इसके बाद मैं तुमको इस्लाम की दावत की तरफ बुलाता हूँ, इस्लाम लाओ, तुम सलामत रहोगे, ख़ुदा तुमको दोगुना अज्र देगा और अगर तुमने न माना तो अहले मुल्क का गुनाह तुम्हारे ऊपर होगा, ऐ अहले किताब! एक ऐसी बात की तरफ आओ जो हममें और तुममें यकसां है, वह यह कि हम खुदा के सिवा किसी को न पूजें और हममें से कोई (खुदा को छोड़ कर) किसी और को खुदा न बनाये, और तुम नहीं मानते तो गवाह रहो की हम मानते हैं।

❖❖❖

## किस्रा परवेज़ के नामः-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्र—हीम, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैगम्बरे खुदा की तरफ़ से किस्रा रईस के नाम—

सलाम है उस शख़्स पर जो हिदायत का पैरू हो और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाये और यह गवाही दे कि खुदा सिर्फ एक खुदा है और यह कि खुदा ने मुझको तमाम दुनिया का पैगम्बर मुकर्रर करके भेजा है, ताकी वह हर ज़िन्दा शख़्स को खुदा का ख़ौफ़ दिलाये, तुम इस्लाम क़ुबूल करो तो सलामत रहोगे, वरना मजूसियों का वबाल तुम्हारी गर्दन पर होगा।

❖❖❖

## नज्जाशी के नामः-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्र—हीम, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ से जो अल्लाह का रसूल है यह खत नज्जाशी के नाम है जो हब्शा का रईसे आज़म है, सलाम है उस शख़्स पर जो हिदायत का पैरू हो, अम्मा बाद! मैं हम्द बयान करता हूँ तुमसे उस अल्लाह की जिसके सिवा कोई माबूद नहीं जो बादशाह है क़ुद्दूस है, मोमिन और मुहैमिन है, और गवाही देता हूँ, इस बात की ईसा बिन मरियम अल्लाह की रूह और उसका कलमा हैं जिसको उसने पाक नफ़्स व पाकबाज़ मरियम बतूल में फूंका था कि पस उसकी रूह और उसके नोफ़क़ से ईसा इनके बतन में क़रार पाये, जैसे उसने

ने आदम को अपने हाथ से बनाया था, मैं तुझको दावत देता हूँ एक अल्लाह पर ईमान लाने की, जिसका कोई शरीक़ नहीं और उसकी ताअत पर मवालात (जमे रहने) की और यह कि तुम मेरी इत्तबाअ़ करो, और जो कुछ मेरे ऊपर वही आई है, इस पर ईमान लाओ, पस बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ, और मैं तुमको तुम्हारे लश्करों को अल्लाह अज्ज़ व जल की तरफ़ बुलाता हूँ, मैंने अपना पैग़ाम कह दिया और नसीहत पूरी कर दी, पस यह नसीहत कबूल करो, और सलाम हो उस पर जो हिदायत का पैरू हो!

❖❖❖

## किबतियों के सरदार और बादशाह मक़ूक़स के नामः-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, खुदा रहमान व रहीम के नाम से, मुहम्मद रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ से मक़ूक़स रईस किबत के नाम, उसको सलामती हो जो हिदायत का पैरू है, इसके बाद मैं तुमको इस्लाम की दावत देता हूँ, इस्लाम ले आओ सलामत रहोगे, खुदा तुमको अज्र देगा, अगर तुमने न माना तो अहले मुल्क का गुनाह तुम्हारे ऊपर होगा, ऐ अहले किताब एक ऐसी बांत की तरफ़ आओ जो हममें और तुममें यकसां है और वह यह की हम खुदा के सिवा किसी की इबादत न करें और हममें से कोई किसी को (खु़दा को छोड़ कर) ख़ुदा न बनाये और तुम नहीं मानते तो गवाह रहो की हम मानते हैं।

## इन सलातीनों ने नामाहाये मुबारक के साथ क्या मुआमला किया?

''हिरक़्ल'', नज्जाशी और मक़ूक़स इन तीनों ने मकातिबे नबवी के साथ अदब का मुआमला किया, इनकी तरफ़ से उनके जवाब में तवाज़ोअ़ और एहतराम था, नज्जाशी और मक़ूक़स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हदाया भी भेजे, उनमें दो बाँदियाँ भी थीं जिनमें एक का नाम मारिया रज़ि0 था और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साहबज़ादे इब्राहीम इन्हीं के बतन से थे।

जहां तक किस्रा परवेज़ का तअल्लुक़ है, उसने नामाहाये मुबारक सुनते ही चाक कर डाला और बोला मेरा गुलाम हो कर मुझको यूं लिखता है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इत्तला मिली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ने फ़रमाया, अल्लाह उसके मुल्क के टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

(नबी-ए-रहमत से ग्रहीत)

❖❖❖

### दुरूद व सलाम ..................

दुरूद व सलाम पढ़ते हैं और अपने भाइयों को भी इसकी दावत देते हैं। अल्ला हुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिवं व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम।

❑❑

### जुहूरे कुदसी ..........................

वालिदा ने और दो-तीन रोज़ के बाद ''सुवैबा'' ने दूध पिलाया (जो अबूलहब की लौंडी थी)। सुवैबा के बाद हज़रत हलीमा सअ़दिया ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूध पिलाया।

❑❑

# हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ि0 के मुकाशफात व करामात

—मौलाना अब्दुश्शकूर फारूक़ी रह0 —अफ़ीफ़ा सिद्दीक़ा (बी.ए.)

अहादीसे नबविया सल्ल0 में हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ि0 के लिए जिस तरह और कमालात बयान फ़रमाये गये हैं उसी तरह आपका साहिबे ख़वारिके आदत होना भी इरशाद फ़रमाया गया है, चुनांचे जिस क़दर ख़वारिके आदत और मुकाशफ़ात का ज़ुहूर आप से हुआ किसी सहाबी से मनकूल नहीं है। सबसे बड़ी करामात आप की वह अजीमुश्शान फ़ुतूहात हैं जो बहुत ही कलीलुल मुद्दत (कम वक़्त) और बिलकुल बे सरो सामानी की हालात में हुईं जिनका ज़िक्र यहां छोड़ा जाता है। इस्लामी खिदमात जिनका ज़ुहूर आप से हुआ और आप की फ़ौज के लिए जो ग़ैबी इमदाद के वाकियात पेश आये वह भी आप की करामात में शुमार किये जायेंगे, यहां चंद उमूर मिसाल के तौर पर पेश किये जाते हैं—

1. एक रोज़ आप रज़ि0 जुमे का ख़ुतबा पढ़ रहे थे कि अचानक बुलन्द आवाज़ से दो या तीन मरतबा "या सारियतल जबल, अलजबल" (ए सारिया पहाड़ की तरफ़) फरमाया और उसके बाद फिर ख़ुतबा शुरुअ़ कर दिया, तमाम हाज़िरीन को हैरत थी कि यह बे रब्त जुमला आप रज़ि0 की ज़बान से कैसे निकला, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि0 से बेतकल्लुफी ज़्यादा थी, उन्होंने आप रज़ि0 से दरयाफ्त किया कि आज आप रज़ि0 ने ख़ुतबे के दर्मियान में "या सारियतल जबल, अलजबल" कैसे फरमाया? तो आपने एक लश्कर का ज़िक्र फरमाया जो इराक़ में बमुक़ाम नहावन्द जिहाद में मशगूल था, उस लश्कर के सरदार सारिया रज़ि0 थे,फरमाया कि मैंने देखा कि वह पहाड़ के पास लड़ रहे हैं और दुश्मन की फ़ौज सामने से भी आ रही है और पीछे से भी आ रही है, जिसकी लोगों को ख़बर नहीं, यह देख कर मेरा दिल क़ाबू में न रहा और मैंने आवाज़ दी कि ऐ सारिया! पहाड़ से मिल जाओ, थोड़े दिनों के बाद जब सारिया का कासिद आया तो उसने सारा वाकिआ़ बयान किया कि हम लोग लड़ाई में मशगूल थे कि यकायक आवाज़ आई "या सारियतल जबल, अलजबल" इस आवाज़ को सुन कर हम लोग पहाड़ से मिल गये और हमको फ़तह मिली।

2. जब मिस्र फ़तह हुआ तो अहले मिस्र ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 (फ़ातेह मिस्र) को लिखा कि हमारे मुल्क में काश्तकारी का दारोमदार दरिय—ए—नील पर है और दरिय—ए—नील का यह दस्तूर है कि हर साल एक कुंवारी लड़की जो हुस्नो जमाल में सबसे मुम्ताज़ होती है दरिया में डाली जाती है अगर किसी साल ऐसा ना किया जाये तो दरिया नहीं बढ़ता और सूखा पड़ जाता है। हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 ने यह वाकिया हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ि0 को लिख भेजा, आप रज़ि0

ने जवाब में तहरीर फरमाया कि इस्लाम ऐसी वहशियाना रस्म की इजाज़त नहीं देता और आप रज़ि0 ने एक ख़त दरिय–ए–नील के नाम लिख कर भेजा जिसका मज़मून यह था– "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, यह ख़त अल्लाह के बन्दे उमर बिन ख़त्ताब रज़ि0 की तरफ़ से नील नदी मिस्र के नाम है, अगर तू अपने इख़्तियार से जारी है तो हम को तुझ से कुछ काम नहीं। अगर तू अल्लाह के हुक्म से जारी है तो अब अल्लाह के नाम पर जारी रहना"। इस ख़त के डालते ही दरिय–ए–नील बढ़ना शुरु हुआ और पिछले सालों से 6 ग़ज़ ज़्यादा बढ़ा और उस दिन से यह रस्मे बद ख़त्म हो गई।

3. मुसलमानों का लश्कर जब इराक़ के अन्दर हलवान के दामन में पहुंचा और नमाज़े अस्र के लिए अज़ान दी गई तो पहाड़ से अज़ान का जवाब आया, जब मुअज़्ज़िन ने कहा अल्लाहु अकबर तो पहाड़ से आवाज़ आई कि "लक़द कब्बरता कबीरन" यानी ऐ मुअज़्ज़िन तूने बड़ी ज़ात की बड़ाई बयान की, और जब मुअज़्ज़िन ने अशहदुअन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह कहा तो पहाड़ से आवाज़ आई कि यही वह नबी हैं जिनकी बशारत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने दी थी। इस तरह हर कलमा का जवाब पहाड़ से आया जब अज़ान से फ़राग़त हुई तो मुसलमानों ने कहा कि ऐ शख़्स! अल्लाह तुझ पर रहमत नाज़िल करे, तू फ़रिश्ता है कि जिन्न है या ख़ुदा का कोई बन्दा है, तूने अपनी आवाज़ तो हम को सुना दी अब अपनी शक्ल भी हम को दिखा दे क्योंकि हम लोग रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के असहाब रज़ि0 और उमर बिन ख़त्ताब रज़ि0 के भेजे हुए हैं, यह कहना था कि पत्थर एक जगह से फटा और एक बूढ़े शख़्स नमुदार हुए और उन्होंने बाद सलाम कहा कि मेरा नाम जरयत बिन बरश्मला है, मैं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का सहाबी हूँ उन्हींने मुझे इस पहाड़ में ठहराया था और मेरे लिए अपने नुज़ूल तक लम्बी उम्र की दुआ मांगी थी। अच्छा उमर बिन ख़त्ताब रज़ि0 को मेरा सलाम कहना और कहना कि कयामत क़रीब आ गई है और इसी किस्म की चन्द बातें करके वह नज़र से गायब हो गये, फिर हर चन्द तलाश किया गया कुछ पता न चला।

4. एक रोज़ ख़्वाब से बेदार हो कर आपने फरमाया कि इस वक़्त मैं उस शख़्स को देख रहा था जो उमर बिन ख़त्ताब की नस्ल से होगा और उमर बिन ख़त्ताब की रविश इख़्तियार करेगा, यह इशारा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह0 की तरफ था, वह आप रज़ि0 के साहबज़ादे हज़रत आसिम रज़ि0 के नवासे हैं।

5. एक रोज़ हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाह वजहहू ने ख़्वाब देखा कि फज्र की नमाज़ मैंने रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे पढ़ी और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेहराब से तकिया लगा कर बैठ गये, एक औरत एक तबक़ छुहारों का लाई और रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम के सामने रख दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक छुहारा उस में से लेकर मेरे मुँह में रख दिया और फिर दूसरा छुहारा उठा कर मेरे मुँह में रख दिया, इसके बाद मेरी आँख खुल गई और दिल में रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत का शौक़ था और ज़बान पर उन छुहारों की हलावत बाक़ी थी। उस के बाद मैं वुज़ू करके मस्जिद गया और हज़रत उमर रज़ि0 के पीछे फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी और वह बिल्कुल उसी तरह मेहराब से तकिया लगाकर बैठ गये, मैंने इरादा किया कि अपना ख़्वाब बयान करूं लेकिन क़ब्ल इसके कि मैं कुछ बोलूँ एक औरत आई और उसके हाथ में एक तबक़ खजूरों का था, वह मस्जिद के दरवाज़े पर खड़ी हो गई और वह तबक़ हज़रत उमर रज़ि0 के सामने ला कर रखा गया, उन्होंने उसी तरह दो छुहारे एक के बाद दीगर मेरे मुँह में रखे और बाक़ी दूसरे सहाबा किराम रज़ि0 को तकसीम कर दिये। मेरा दिल चाहता था कि मुझे और दें तो फ़रमाया कि ऐ भाई! अगर रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रात को तुम्हें इससे ज़्यादा दिये होते तो मैं भी ज़्यादा देता। हज़रत अली फरमाते हैं कि मुझे तअज्जुब हुआ कि जो ख़्वाब मैंने रात में देखा था वह सब उनको मालूम था, तो फरमाया कि ऐ अली! मोमिन नूरे ईमान से देख लेता है। मैंने कहा ऐ अमीरूल मोमिनीन! आप सच कहते हैं मैंने ऐसा ही ख़्वाब देखा था और आप रज़ि0 के हाथ से भी छुहारों की वही लज़्ज़त पाई जो रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दस्ते मुबारक से मिली थी।

6. एक मरतबा आप रज़ि0 का एक लश्कर किसी दूर दराज़ मक़ाम में जिहाद पर था कि एक दिन मदीना मुनव्वरा में बैठे–बैठे आपने फरमाया ''या लब्बैकाहु'' किसी की समझ में न आया कि क्या बात है, यहां तक की वह लश्कर वापस आया और सरदारे लश्कर ने फुतूहात का बयान शुरु किया तो आप रज़ि0 ने फरमाया कि इन बातों को रहने दो उस शख़्स का हाल बयान करो जिसको तुमने जबरन पानी में भेजा था उस पर क्या गुज़री, सरदारे लश्कर ने कहा ऐ अमीरूल मोमिनीन! अल्लाह की क़सम मैंने उसके साथ बदी का इरादा नहीं किया था, बात यह हुई कि हम लोग एक ऐसे दरिया पर पहुँचे जिसकी गहराई की हद मालूम ना थी कि उसे उबूर किया जा सके, लिहाज़ा मैंने उस शख़्स को बरहना किया और पानी में भेजा, हवा बहुत ठण्डी थी उस शख़्स पर हवा का असर हो गया, उसने फरियाद की ''वा उमराहु, वा उमराहु'' उसके बाद वह शख़्स सर्दी की शिद्दत से हलाक हो गया। जब लोगों ने इस किस्से को सुना तो समझा कि उस दिन की लब्बैक उनकी उसी मज़लूम के जवाब में थी।

हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि0 ने सरदारे लश्कर से फरमाया कि अगर यह अन्देशा

शेष पृष्ठ.....29 पर

# इस्लाम विरोधी प्रश्नों के उत्तर

## ख़त्ना

—नजमुस्साकिब अब्बारी नदवी

**प्रश्नः** मुसलमान ख़त्ना क्यों करवाते हैं?

**उत्तरः** ख़त्ने का चलन केवल मुसलमानों में ही नहीं बल्कि यहूदियों में भी है। हज़रत ईसा अ0 का ख़त्ना कराना साबित है और ईसाइयत के शुरुआती दौर में ख़त्ना कराने का प्रमाण मिलता है। अब ये अलग बात है कि ईसाई इसका इन्कार करते हैं।

**इस्लाम में ख़त्ना–**

पवित्र हदीस में है:–

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि पाँच चीज़ें प्राकृतिक हैं:–

1. ख़त्ना कराना 2. नाभि के नीचे के बाल काटना 3. मूँछें तराशना 4. नाखून काटना 5. बगलों के बाल उखाड़ना।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

इमाम अहमद रह0 ने शद्दाद बिन औस के हवाले से ये बात लिखी है कि ख़त्ना मर्दों के लिए सुन्नत है।

**सर्वप्रथम हज़रत इब्राहीम अ0 ने ख़त्ना किया–**

बुख़ारी व मुस्लिम जो इस्लामी शरीअत का प्रमाणित ग्रन्थ है, उसमें हज़रत अबूहुरैरह रजि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि हज़रत इब्राहीम अ0 ने 80 वर्ष की आयू में कुल्हाड़ी से ख़त्ना किया।

**ख़त्ना करवाने के लाभ–**

"साइंस और दुनिया" नामक पुस्तक में डॉ0 वाचर के हवाले से ख़त्ने के लाभ गिनाए गए हैं जो निम्नलिखित हैं:–

1. ख़त्ने से व्यक्ति शिशन (PENIS) कैंसर से बच जाता है।
2. ख़त्ना से पुरुष अकारण वासना और दुष्विचार से सामान्यतः बचा रहता है।
3. ख़त्ना से आतशक (SYPHILIS) सूज़ाक और भयंकर एलर्जी जैसी बीमारियों पर सामान्यतः अंकुश बना रहता है।
4. डॉक्टरों के अनुसार यदि बच्चा बेहोशी के ख़तरनाक दौरों से ग्रस्त हो तो उसका ख़त्ना कर देने से बहुत जल्दी ठीक हो जाता है।
5. वैद्य–हकीमों यहाँ तक की डॉक्टरों ने भी ख़त्ना को बेऔलादी और शीघ्रपतन का कामयाब इलाज बताया है।

**ख़त्ना न करवाने की हानियाँ–**

1. यदि ख़त्ना न करवाया जाए तो पेशाब के रुक जाने और गुर्दे की पथरी का अन्देशा रहता है।
2. कई भयंकर बीमारियों के कीटाणु विशेष अंग के घूँघट के फांस में फंस कर अन्दर ही अन्दर बढ़ना शुरु हो जाते हैं, जिससे विशेष अंग (PENIS) में इक्जिमा, ख़ारिश और एलर्जी हो सकती है।
3. महिलाओं में उसके बुरे प्रभाव पड़ते हैं, क्योंकि उपर्युक्त रोग पुरुषों द्वारा महिलाओं में स्थानांतरित होते हैं।
4. जिन धर्मों में ख़त्ने का चलन नहीं है, उनमें माँओं को बड़ी एहतियात से काम लेना पड़ता है। बच्चे के विशेष

अंग की खाल न कटी हो तो उसकी अन्दरूनी जानिब पेशाब, पसीने से मैल–कुचैल जमकर जलन पैदा करते हैं, जिससे बच्चे के मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

(साइंस और दुनिया)

## बैठ कर पेशाब करना

**प्रश्नः** मुस्लिम मर्द महिलाओं की तरह बैठकर क्यों पेशाब करते हैं?

**उत्तरः** चूँकि इस्लाम एक प्राकृतिक धर्म है। अतः जिन कार्यों के करने और न करने के आदेश दिये हैं उसके स्पष्ट कारण भी बताए हैं। खड़े होकर पेशाब करने से जो इस्लाम ने मना किया है उसके आध्यात्मिक और वैज्ञानिक कारण हैं।

**पवित्र हदीस में हैः-**

"हज़रत आइशा रज़ि0 कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैठ कर पेशाब किया करते थे"। (मिश्कात–तिर्मिज़ी)

"हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि0 से रिवायत है कि खड़े हो कर पेशाब करना गंवारपन है"। (तिर्मिज़ी)

**खड़े हो कर पेशाब करने का नुक़सान-**

इस्लाम बैठ कर पेशाब करने का आदेश देता है, यदि खड़े होकर पेशाब किया जाए तो उसके कारण निम्नलिखित रोगों की आशंका बढ़ जाती हैः–

1. चूँकि पेशाब कीटाणुओं पर आधारित होता है और कभी–कभार उसमें कई रोगों अर्थात सूज़ाक, आतशक (उपदंश) और गुर्दों का जीवाणुवीय इंफेक्शन आदि की आशंका बढ़ जाती है।
2. खड़े होकर पेशाब करने से उसकी छींटें शरीर और वस्त्रों को गन्दा करती हैं, जिससे PROSTATE (शिश्न की ग्रन्थियों) पर बुरा प्रभाव पड़ता है और वह बढ़ जाता है, जिससे पेशाब का बन्द होना, पेशाब का बूँद–बूँद आना, तकलीफ से आना और धात का पतला होना जैसे रोग पैदा हो सकते हैं।

**पेशाब की छींटों से बचना-**

हदीस में अधिकता से पेशाब के छींटों से न बचने पर गंभीर परिणाम भुगतने हेतु चेताया गया है। एक हदीस में हैः–

"पेशाब से बचो, अक्सर अज़ाबे क़ब्र पेशाब के छींटों से न बचने के कारण होता है"।

प्राच्यविद्या विशारद (मुस्तशिरक़) जान मिल का कहना है कि मेरे पास जांघों की खुजली, फुंसियों, पेडू की त्वचा का उधड़ना, नितंबों और उसके इर्द–गिर्द की एलर्जी तथा विशेष अंग के ज़ख़्म के मरीज़ जब आते हैं तो मेरा उनसे पहला प्रश्न यही होता है कि क्या वह पेशाब से बचते हैं? उनमें अधिकतर का उत्तर "नहीं" में होता है, और फिर वह मुश्किल और लाइलाज रोगों को लेकर मेरे पास आते हैं।

(साइंस और सेहत)

पैंट और अण्डरवियर की चैन अथवा बटन खोलकर पेशाब करने, फिर बिना इस्तिन्जा (धोए अथवा मिट्टी के ढेले का प्रयोग किये बिना) फौरन पहन लेने की दशा में पेशाब की बूंदें शरीर के अंगों पर गिरती हैं, जिससे चर्म रोग और अनेक रोग जन्म लेते हैं। ❑❑

# आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

**प्रश्नः** एक औरत को अपने हज में तवाफे ज़ियारत से पहले हैज़ आ गया, उसका हवाई सफर उसकी पाकी से पहले ज़रूरी है, अब वह तवाफे ज़ियारत कैसे अदा करे?

**उत्तरः** वह कोशिश करे कि उसकी फ्लाइट किसी अगले जहाज़ से हो और वह पाक हो कर तवाफ करे। आम तौर से इस कोशिश में कामयाबी मिलती है, लेकिन अगर ऐसा मुमकिन न हो तो अंदर लंगोट वगैरह बांध ले ताकि मताफ गन्दा होने से महफूज़ रहे और तवाफ़े ज़ियारत कर ले, मगर इस सूरत में एक बदने (ऊँट या गाय) का दम दे (देखिए कस्तलानी की इरशा–दुस्सारी इला मनासिक पेज नं0 261) इस तरह औरत का तवाफे ज़ियारत पूरा हो जाएगा और अब उस पर एहराम की कोई भी पाबन्दी न रहेगी। लेकिन अगर उसने तवाफे ज़ियारत के बिना सफर कर लिया तो वह जब तक जा के तवाफे ज़ियारत न कर ले शौहर के लिए हलाल न होगी, चाहे सालों गुज़र जाएं।

**प्रश्नः** एक औरत तवाफे वदाअ़ से पहले माहवारी में मुब्तला हो गई और उसके सफर का वक्त आ गया, और हवाई सफर आसानी से बदलता नहीं है, अब उसके तवाफे वदाअ़ का क्या हुक्म है?

**उत्तरः** ऐसी औरत ने अगर तवाफे ज़ियारत के बाद कोई नफली तवाफ किया है तो वह तवाफे वदाअ़ मान लिया जाएगा, लेकिन अगर ऐसा नहीं है और पाकी से पहले उसका सफर ज़रूरी है तो उसे तवाफे वदाअ़ मुआफ है।

**प्रश्नः** एक शख़्स ने दो साल पहले अपने पैसों के हिसाब से समझा कि उस पर हज फर्ज़ है, उसने हज के लिए फार्म भर दिया मगर उस साल मंजूरी न मिली, दूसरे साल फिर कोशिश की मगर फिर नाम न आया, इस साल फिर फार्म भरा और नाम निकल आया, हज कमेटी वालों ने उसे मदीना तय्यिबा पहुंचा दिया, अल्लाह की मर्जी कि मदीना तय्यिबा में उसकी वफात हो गई और वह हज न कर सका, क्या उस पर फ़र्ज़ हज न अदा करने का गुनाह होगा?

**उत्तरः** ख़ुश नसीब है ऐसा शख़्स जिसकी मौत ईमान की हालत में मदीना तय्यिबा में हुई, अल्लाह तआ़ला उसके मुतअल्लिक़ीन को सब्रे जमील से नवाज़े। रहा उसका हज तो फर्ज़ होने के बाद वह बराबर कोशिश करता रहा, मगर दो साल नाकाम रहा यानी रास्ते की सुहूलत उसको ना मिली और तीसरे साल हज के रास्ते में उसकी वफात हुई, इन्शा अल्लाह उस पर फर्ज़ हज न करने का गुनाह न होगा। अलबत्ता अगर वह हज फर्ज़ होने के बाद हज पर जाने की कोशिश व कारवाई न करता और दो साल के बाद कोशिश करता और

हज से पहले फौत हो जाता तो उस पर हज छोड़ने का गुनाह होता, वल्लाहु आलम।

**प्रश्नः** नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे गिरामी सुनकर अंगूठे चूमना कैसा है?

**उत्तरः** नबीये अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे गिरामी सुन कर अंगूठे का चूमना किसी सही हदीस से साबित नहीं, इसलिए उसको सुन्नत समझना या उसे मुस्तहब समझना दुरुस्त नहीं, चूंकि अवाम इसे ज़रूरी मानते हैं इसलिए उसका तर्क ज़रूरी है, वल्लाहु आलम, बिस्सवाब। अलबत्ता हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे नामी सुनकर दुरूद न पढ़ेगा तो उस पर वाजिब के तर्क का गुनाह होगा।

**उत्तर, द्वारा सम्पादक**

**प्रश्नः** 12 रबीउल अव्वल को ईदेमीलादुन्नबी (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश के दिन जश्न) मनाना कैसा है?

**उत्तरः** अल्लाह के नबी सल्ल–ल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश का दिन बिला शक बहुत ही बरकत का दिन है, उस दिन तो आप पर ईमान ना ला सकने वाले आपके चचा अबू लहब ने भी खुशी में लौंडी आज़ाद की थी, मगर उसके बाद वह दिन ऐसा भुलाया गया कि फिर कभी न अबूलहब ने उस दिन को याद किया, न दादा अब्दुल मुत्तलिब ने, यहाँ तक कि अहादीस के ज़ख़ीरों में कोई कौली हदीस मेरी नज़र से नहीं गुज़री जिसमें आपने फरमाया हो कि मैं फुलाँ तारीख को पैदा हुआ, सहाब–ए–किराम से भी कोई रिवायत नहीं मिलती कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश का कोई दिन मनाते थे। यह अलग बात है कि दुनिया के लोग अपने बड़ों की पैदाइश का दिन मनाते हैं उसको देख कर मुसलमानों के दिल में भी यह तकाज़ा पैदा हुआ कि हम भी अपने पैगम्बर की पैदाइश का दिन मनाएं और इस तरह उप महाद्वीप में ईदे मीलादुन्नबी का रवाज़ पड़ गया और ऐसा पड़ा कि उसके ख़िलाफ ज़बान खोलना आसान न रहा, लेकिन सच्ची बात यह है कि इसका सिर्फ जज़्बात से तअल्लुक़ है, मगर यह इताअते रसूल और इताअते सहाबा से अलग चीज़ है। फिर सोचने की बात है और तमाम दीन से वाकिफ लोगों से पूछा जा सकता है कि सहाब–ए–किराम के लिए सबसे ज़्यादा ग़म का दिन कौन सा था तो इसमें किसी का इख़तिलाफ न होगा कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात का दिन था। और आपकी वफात की तारीख़ पर सब मुत्तफिक़ हैं कि वह 12 रबी–उल अव्वल है और यह इतनी मशहूर है कि हिन्द व पाक और बांग्ला देश में इस महीने का नाम ही बारह वफात पड़ गया। अगर्चि इस्लाम ने ग़म का दिन मनाने की तालीम नहीं दी लेकिन जज़्बात ही के तहत सोचें कि जिस तारीख़ को हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत फातिमा, हज़रत हसन, हज़रत हुसैन और तमाम सहाब–ए–किराम रज़ि0 को सबसे ज़्यादा गम हुआ उस दिन हम उनका ग़म भुला

कर जश्न मनाएं यह बड़ी अजीब बात है। उस दिन अगर ज़िक्र व इबादत का एहतिमाम होता तो जश्न मनाने से बेहतर होता। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश कोई 8 रबीउल अव्वल लिखता है कोई 9, कोई 12 लेकिन वफात की तारीख़ सब 12 ही लिखते हैं। फिर यह भी काबिले गौर बात है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आठ औलाद हुई दो नवासे आपके सामने पैदा हुए आपने किसी का यौमे विलादत न मनाया, हमे भी चाहिए कि हम अपने जज़्बात को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ताबेअ़ बनायें। इस बयान के बाद 12 रबीउल अव्वल को जश्न मनाने, ईद मनाने का फैसला आप खुद करलें, मैं अपना क़लम रोकता हूँ कि जज़्बात के मुकाबले की ताकत नहीं और दुआ करता हूँ कि ऐ अल्लाह! अपनी महब्बत दे, अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्ची महब्बत और इताअत की दौलत अता फरमा कि नजात इसके सिवा में नहीं। अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिंव व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम।

**प्रश्नः** ज़िक्रे मीलादुन्नबी के बारे में आपकी क्या राय है?

**उत्तरः** नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हर ज़िक्र बा बरकत है, आप की पैदाइश का ज़िक्र भी बा बरकत है, इस सिलसिले में मैंने एक किताबचा लिखा है जिसका नाम है "ज़िक्रे मीलादुन्नबी" हजरत मौलाना अब्दुश्शकूर फारूक़ी की किताब "नफह–ए–अंबरिया ब ज़िक्रे मीलाद ख़ैरुल बरीया" बेहतरीन किताब है, मौलाना अशरफ अली थानवी की किताब "नश्रुत्तीब फी ज़िक्रे हबीब" अहम किताब है अलबत्ता मीलाद की किताबों में जो आम तौर से महफिले मीलाद में पढ़ी जाती हैं उनमें बाज बातें ठीक नहीं हैं, हम इस परचे में "जुहरे कुदसी" के नाम से जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश पर है, शामिल कर रहे हैं। अलबत्ता इसका ख़्याल ज़रूर रखना चाहिए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश के ज़िक्र के साथ उन बातों का ज़िक्र भी लायें जिनके लिए अल्लाह तआ़ला ने आप को पैदा फरमाया और मबऊस फरमाया यानी कुछ ऐसी हदीसें भी पढ़ी जाएं जिनमें उम्मत के लिए तालीमात हों।

**प्रश्नः** फातिहा का सही तरीक़ा क्या है?

**उत्तरः** फातिहा अपनी इबादत का सवाब किसी दूसरे भाई को बख़्शने को कहते हैं, चूंकि इसमें दुआ करते वक़्त सूर–ए–फातिहा भी पढ़ते हैं इस लिए इसका नाम फातिहा देना पड़ गया, इसका अच्छा तरीक़ा यह है कि आप कोई माली इबादत करें, किसी को कच्चा या पका खाना दे दें, कपड़ा दे दें, नक्द पैसा दे दें, फिर अल्लाह तआ़ला से दुआ करें कि इस माल को मुहताज (ज़रूरत मंद) को देने का सवाब फलां की रूह को बख़्श दीजिए और चाहे तो दुआ करने से पहले दुरूद शरीफ़ और सूर–ए–फातिहा पढ़ कर अल्लाह तआ़ला से दुआ करे कि जो मैंने खाना वगैरह गरीब को दिया और

जो कुछ पढ़ा इस सब का सवाब फुलां–फुलां की रूह को बख़्श दीजिए, और अगर सिर्फ कुछ पढ़ कर दुआ की कि ऐ अल्लाह! जो कुछ मैंने पढ़ा है इसका सवाब फुलां की रूह को बख़्श दीजिए। बस यही फातिहा का सही तरीक़ा है, जो लोग वफात पा चुके उनसे तअल्लुक़ रखने के लिए फातिहा अच्छा ज़रीआ़ है, लेकिन याद रहे फातिहा देने वाला और जिस को सवाब बख़्श रहे हैं दोनों का ईमान वाला होना ज़रूरी है वरना सवाब न पहुँचेगा।

वल्लाहु आलम, बिस्सवाब!

❑❑

**हज़रत फारूक़े आज़म .....**

न होता कि मेरे बाद एक दस्तूर कायम हो जायेगा तो यकीनन मैं तेरी गर्दन मार देता, अच्छा जा उस मक़तूल के अहलो अयाल को खूँबहा अदा कर, और अब कभी अपनी सूरत मुझे न दिखाना, एक मुसलमान का क़त्ल हो जाना मेरे नज़दीक बहुत से काफ़िरों के क़त्ल से ज़्यादा है।

(सीरत खुलफाए राशिदीन से ग्रहीत)

❖❖❖

# यौमे जमहूरिया

## (पद्य)

इदारा

जनवरी छब्बीस है यह यौम है जमहूर का
है अहम यह दिन बहुत यह यौम है दस्तूर का
हक़ दिया हमने यहाँ हर एक को दस्तूर में
इन्स क्या हैवान भी महफूज़ हैं दस्तूर में
हिन्दू मुस्लिम सिख यहां दस्तूर में आज़ाद हैं
और मसीही भी यहां दस्तूर में आज़ाद हैं
हैं सक़ाफ़त याँ बहुत और ज़बाने बेशुमार
हैं ब्रह्मण छत्रीय और वैश्य और कोरी चमार
सब को इज़्ज़त और हक़ यां है दिया दस्तूर ने
राय दी जनता ने .तो मनसब दिया दस्तूर ने
हैं मगर रहती यहां कुछ ज़ालिमों की टोलियां
जिनके हाथों से उड़ीं दस्तूर की हैं धज्जियाँ
क़त्लो ग़ारत काम उनका शेवा उनका लूट का
चाल वह ऐसी चलें कि फ़ैसला हो छूट का
लूट लें गुजरात को और फूँक दें आसाम को
लग सका न दाग़ फिर भी उनके ऊँचे नाम को
फिर भी हिम्मत रखते हैं हम इन बुरे अय्याम में
वह हैं करते काम अपना हम हैं अपने काम में
हक़ पे रहना हक़ पे चलना बस हमारा काम है
हक़ को जिसने पीठ दी उसका बुरा अन्जाम है

❖❖❖

# पिस्ते का फालूदा

—ज़हीर नियाज़ी रोहतासी

काज़ी अबू यूसुफ का असल नाम याकूब था। हारून रशीद (अब्बासी खलीफ़ा) के यहाँ एक दिन दस्तरख़ान पर पिस्ते से तैयार किया हुआ फालूदा आया, जिसे हारून ने काज़ी अबू यूसुफ़ के आगे बढ़ा दिया। अबू यूसुफ की आँखों में आँसू आ गए। हारून ने कारण पूछा तो अबू यूसुफ़ ने एक कहानी सुनाई– बरसों पहले एक बुढ़िया ने कूफ़ा के एक धोबी के यहाँ अपने दस वर्षीय बेटे को नौकर रखवाया। महीना पूरा हुआ तो वेतन लेने पहुँची। धोबी बोला "बिना काम का दाम?" धोबी के यहाँ बुढ़िया का बेटा एक दिन भी काम करने नहीं गया था। बेटे से पूछा "आख़िर तू जाता कहां है?" बेटे ने बताया "इमामे आज़म अबू हनीफ़ा के मदरसे में" बुढ़िया वहां पहुंची। बोली इस लड़के का बाप बेहद बूढ़ा, बीमार और कमज़ोर है। सूत कात– कात कर मैं बड़ी मुश्किल से घर चलाती हूँ। इमाम साहब! इसे समझाइये कि पढ़–लिख कर क्या होगा? धोबी के यहां नौकरी करे कि दो पैसे मिलें।

इमाम साहब मुस्कुराए, बोले "माई! यह लड़का तो पिस्ते से बना हुआ फालूदा खाना चाहता है और तू इसे रूखी–सूखी रोटी खिलाना चाहती है"। बुढ़िया बोली "आप सठिया गए हैं, इसीलिए हम गरीबों का मज़ाक़ उड़ा रहे हैं"। बकती–बड़बड़ाती बुढ़िया घर लौट गयी। कुछ ही देर बाद इमाम साहब की तरफ़ से खाने–पीने की सारी चीज़ें बुढ़िया के यहां पहुंच गईं। और जब तक बूढ़ा–बूढ़ी ज़िन्दा रहे पहुंचती ही रहीं और जब तक उनका बेटा कमाई करने के लायक नहीं हो गया तब तक पहुंचती रहीं। वह बेटा आर्थिक चिंता से पूरी तरह मुक्त होकर बड़े इतमिनान से इल्म की दौलत हासिल करता रहा। और उसी इल्म की बदौलत एक दिन वह भी आया कि इमाम साहब की भविष्यवाणी सच साबित होता देख उसकी आँखों में खुशी के आँसू छलक पड़े।

हारूनः "यानी यह कहानी आप ही की है?"

अबू यूसुफः "जी हाँ, आपने सही सुना, सही समझा"।

हारूनः "यानी कल का याकूब कूफ़ी, आज का काज़ी इमाम अबू यूसुफ!"

यह इल्म ही था जिसने याकूब को अब्बासी सल्तनत का चीफ जस्टिस बना दिया। इसीलिए अल्लाह के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि इल्म की दौलत हासिल करना हर मुसलमान पर फर्ज़ है। ❑❑

# ऐतिदाल व मेयानारवी

## (उम्मते मुस्लिमा की संतुलन, सामंजस्य की विशिष्टता)

(4 मई 2012 को मस्जिद, नदवतुल उलमा में इमामे हरम शैख़ अलगामदी मक्की का खुतब–ए–जुमा)

–शैख खालिद अलगामदी

–प्रस्तुतिः हाशिमा बानो

तमाम तारीफ अल्लाह ही के लिए है, हम उस की हम्द बयान करते हैं। और अपने नफ़्स के शर और बुरे अमल से उसी की पनाह में आते हैं। जिसे अल्लाह तआ़ला सीधा रास्ता दिखाए उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता है। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह तआ़ला के अलावा कोई इबादत के लायक नहीं, वह तन्हा है उसका कोई शरीक़ नहीं और गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं। ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो, जिस तरह उससे डरने का हक़ है और इस बात की इच्छा रखो कि तुम्हारी मौत इस्लाम ही पर हो। (सूरः आले इमरान 102) ऐ लोगो! अपने उस परवरदिगार से डरो जिसने तुम को एक जान से पैदा किया, फिर उससे तुम्हारा जोड़ा बनाया और दोनों से पूरी आबादी फैला दी। उस अल्लाह से डरो जिस का नाम ले कर तुम सवाल करते हो। और रिश्तेदारियों का ख़्याल रखो, अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आमाल को देख रहा है। (सूरः निसा 01) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो सच्ची और पक्की बात कहो। अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों को ठीक कर देगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा और जो भी अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअ़त करेगा वह कामयाब होगा। (सूरः अहज़ाबः 70–71)

अम्माबादः सच्चा कलाम अल्लाह तआ़ला का कलाम है, बेहतरीन तर्ज़े ज़िन्दगी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तर्ज़े ज़िन्दगी है। बदतरीन उमूर नई बातें हैं और हर नई बात बिदअ़त है और बिदअ़त गुमराही है, ऐ अल्लाह के बन्दो! तक्वा इख़्तियार करो और तन्हाई और भीड़ में छिपे व खुले हमेशा उसको याद रखो। जो कई रास्तों पर चलता है वह बहादुर नहीं है बल्कि जो अल्लाह से डरता है वही नेक है, अल्लाह तआ़ला हमें इस सआ़दत से सरफ़राज़ फरमाये। आमीन!

उम्मते इस्लामिया आज मुश्किल और नाज़ुक हालात से गुज़र रही है ऐसा महसूस होता है कि यह हालात बहुत मुश्किल और कठिन है, समस्याएं अनगिनत हैं। समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ ही रही है, तमन्नाएं और आरजूएं भी आलमे इस्लाम से वाबस्ता की जा रही हैं, एक मुबस्सिर (दृष्टा) हैरान है कि गुफ़्तगू कहां से शुरु करे। दीन के मसाएल में अहम तरीन मसला और उसके सुनहरे नुकूश में एक चमकदार नक़्श का इस मौक़े पर चर्चा करना चाहता हूँ वह एतिदाल व मेयानारवी है। यह मसला ऐसी ज़्यादती

और बेएतेदाली का शिकार है कि इसकी वजह से तहरीफ़ (किसी बात को कुछ का कुछ कर देना) का अमल जारी है, धोखाधड़ी, गुमराही और दीन के आदेशों से दूरी या उसकी गलत तशरीह (खोल कर बयान करना) वजूद में है। अकीदे में इन्हिराफ़, फ़िक्र में कजी, समाजी बीमारियां, पक्षपात और संकीर्ण दृष्टि एख़्तिलाफ़ व इन्तिशार को उसके ज़रिए हवा मिल रही है।

मुसलमानो! ऐतिदाल व मयानारवी दीन की अहम तरीन पहचान और मुख्य विशेषताओं में है। बल्कि यह नुबूवत की बुनियाद और हर भलाई का स्रोत है। उम्मत को रब्बानियत की विशेषता से सजाने वाली चीज़ है। यह हमेशा रहने वाली शरीअ़त का इलाही रंग है। और हमेशा रहने वाली उम्मत को बाकी रखने वाली खूबी है। आप को मालूम है कि बीच का रास्ता क्या है? जीवन में संतुलन या बीच के रास्ते पर चलना, उम्मते मुहम्मदिया की शान इस की विशिष्टता है। अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त ने इसका तज़किरा कुर्आन करीम में किया है। वसतियत तरक्की याफ़्ता ज़िन्दगी की कार्य प्रणाली है। हमेशा की कामयाबी को पाने का ज़रिया है। भलाई तक पहुंचने का रास्ता है, बल्कि मुसलमानों का आपसी मेल–जोल और गैरों पर उनकी फतह इसमें छुपी है। यह एक रब्बानी तोहफ़ा है जिससे अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत को नवाज़ा है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है "इस तरह हमने तुमको एक संतुलित उम्मत बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह हो और रसूल तुम पर गवाह हों"।

(सूरः अलबक़रः–143)

फर्ज़नदाने तौहीद! यह संतुलित व्यवहार दीन को उसकी असली शकल में पेश करने का एक तराजू है। इसकी बुनियाद चन्द उसूलों पर है, जिन पर अमल करने का अल्लाह तआ़ला ने हम को हुक्म दिया है, और तरग़ीब दी है। और कुर्आन में कई जगहों पर ज़िक्र भी है। इस का बयान बेज़रूरत नहीं है। हर खास व आम शख़्स इस पर अमल करने का दावा नहीं कर सकता है। क्योंकि अरबी शेर जिस का सारांश यह है कि हर शख़्स लैला से अपनी वाबस्तगी का दावा करता है, लेकिन इस का अमल उसके बरखिलाफ है, इसलिए लैला इसे खातिर में नहीं लाती, दावा पर जब तक दलील न हो तो दावा बेबुनियाद है। अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त ने इस संतुलन का ज़िक्र कुर्आन में किया और रसूल पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मामूलात के ज़रिए अमली शक्ल में उसको दिखा दिया। इस संतुलन की पहली बुनियाद भलाई, तकवा, सरलता और अल्लाह तआ़ला की शरीयत पर अमल करना है। उम्मते मुस्लिमा हर प्रकार से संतुलित उम्मत है, यह भलाई, तकवा, सरलता और अल्लाह की शरीयत पर अमल करने वाली उम्मत है। यह उम्मत अल्लाह तआ़ला की शरीयत को मजबूती के साथ लेती है और उस पर भाव–ताव नहीं करती और इस सिलसिले में किसी दुनियावी

भलाई को तरजीह नहीं देती, वह इसके उसूल और अकीदे से तनिक भी समझौता करने के लिए तैयार नहीं है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि "तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए निकाली गयी है, तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह तआ़ला पर ईमान रखते हो"। (आले इमरान–110) एक दूसरी जगह आया है "जिन्होंने कहा हमारा रब अल्लाह है, फिर वह जम गये तो उनके लिए न कोई खौफ़ होगा न कोई ग़म होगा"। (अलअहकाफ–13) अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि "ऐ ईमान वालो! न अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मामूलात में ख़्यानत करो और न अपनी अमानतों में, जब कि हाल यह है कि तुम इल्म रखते हो"।

(अलअनफाल–27)

मतलूबा संतुलन की दूसरी बुनियाद अदल व इन्साफ है, अदल व इन्साफ दोस्त के साथ भी और दुश्मन के साथ भी हो। अदल वह चीज़ है जिस पर ज़मीन व आसमान कायम है। उम्मते मुस्लिमा अगर इस उसूल को अमली शक्ल देगी तो वह बहुत से खैरात व बरकात से मालामाल होगी। उम्मते मुहम्मदिया को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उम्मतों पर गवाही देने वाला सिर्फ इसलिए बनाया है कि वह अदल व इन्साफ़ को हर लम्हे कायम करने वाली उम्मत है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है, "हमने तुम को संतुलित उम्मत बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह रहो और रसूल तुम पर गवाह हों"। (अलबकरा–143) एक दूसरी जगह अल्लाह तआ़ला का इरशाद है "जब तुम कोई बात कहो तो इन्साफ के साथ कहो, चाहे तुम्हारा कोई करीबी ही क्यों न हो"। (अल अनआ़म–152) अल्लाह तआ़ला का इरशाद है "अल्लाह तआ़ला तुमको हुक्म देता है कि तुम अमानतों को उनके मालिक के पास पहुंचा दो और जब तुम लोगों में फैसला करो तो इन्साफ के साथ फैसला करो। अल्लाह तआ़ला तुम्हें बहुत अच्छी बात की नसीहत करता है, वह सुनता है, और देखता है"। (सूरः निसा–56) इरशाद बारी है "ऐ ईमान वालो! अदल को कायम करने वाले हो जाओ और अल्लाह के लिए गवाही देने वाले, अगरचे अपने नफ़्स, वालिदैन और करावतदारों के खिलाफ़ ही क्यों न हो। अगर कोई मालदार है या गरीब, तो अल्लाह तआ़ला उन दोनों के मुकाबले में ज़्यादा तरज़ीह के काबिल है। ख़्वाहीशों पर अमल करके तुम बेइन्साफी न करो और अगर तुम हुक्म ना मानोगे, पीठ फेरोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे मामलात से खूब वाकिफ़ है"।

(सूरः निसा–135)

दोस्त–दुश्मन के साथ अदल व इन्साफ, दूर और नज़दीक रहने वाले शख़्स के साथ इन्साफ, खुद्दार, बातौफीक और शरीफ इन्सानों का तरीक़ा है और बड़े लोगों के अख़लाक़ का हिस्सा है।

मुसलमानो! संतुलन एवं सामंजस्य, बाइज़्ज़त ज़िन्दगी की कार्य प्रणाली है। इसको तीसरी बुनियाद आसानी, मशक्कत को दूर करने, आसानी

पैदा करने और दिल खोल कर कार्यों को सम्पादित करने पर है। यह विशेषताएं रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबूवत के मक़सद में हैं। उग्रवादिता, कठोरता इत्यादि में संतुलन सम्भव नहीं और काहिली, आलस्य, दरिद्रता के साथ भी सामंजस्य ना पसंदीदा है। आपसी फूट, आपस में इख़्तिलाफ (मतभेद) इत्यादि के साथ सामंजस्य बनाना सम्भव नहीं। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है "उसी ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा, उससे पहले भी और इसमें भी ताकि रसूल तुम पर गवाह हों और तुम दूसरी क़ौमों पर गवाह रहो"। (अल हज–78) अल्लाह तआ़ला का इरशाद है "अल्लाह तआ़ला तुम्हारे साथ नरमी चाहते हैं, सख़्ती नहीं चाहते"। (अल बक़रः–185) और बुख़ारी शरीफ़ में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मन्कूल है कि दीन आसान है और जो भी दीन के मामले में सख़्ती बरतेगा तो दीन उसको नीचा कर देगा, लिहाज़ा संतुलन अपनाओ, आहिस्ता चलो, बशारत क़ुबूल करो, सुबह व शाम और रात के आमाल के जरिए अल्लाह की मदद चाहो। (बुख़ारी, रकम–6364)

मुसलमानो! उम्मते मुस्लिमा, बाबरकत और सही सामंजस्य व संतुलन को उस वक़्त तक नहीं पा सकती है जब तक वह क़ुर्आन और हदीसे नबवी को हर मआमले में मध्यस्त न बनाए। वह सहाब–ए–किराम रज़ि0 के विवेक को प्रमाण माने। ताबईन, तबा ताबईन और उलमा–ए–उम्मत के निष्कर्षों को पथ प्रदर्शक माने। क़ुर्आन व हदीस पर अमल भी संतुलन व सामंजस्य के प्राप्ति की निशानी है। क़ुर्आन व हदीस को अपनाना ही मौजूदा फित्नों से हिफाज़त का ज़रिया है। और अक़ाइदी तथा सोची–समझी गुमराही से दूर रहने का वसीला है। क़ुर्आन व हदीस पर अमल संतुलन एवं सामंजस्य की पहचान है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है "अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो"। अल्लाह की रस्सी क़ुर्आन व हदीस है। एक दूसरे मौक़े पर आया है कि "अगर तुम रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत करोगे तो कामयाब होगे" और अल्लाह तआ़ला का दरशाद है कि "उनकी इत्तिबाअ़ करो ताकि तुम हिदायत पाओ"। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, मैं दो चीज़ें तुम में छोड़ कर जा रहा हूँ, अगर तुम इनको मज़बूती से पकड़े रहोगे तो कभी गुमराह नहीं होगे, अल्लाह की किताब और मेरी सुन्नत।

ऐ कल्मागो मुसलमानो! मुकम्मल हिदायत, भलाई, नेकी, संतुलन एंव सामंजस्य क़ुर्आन व हदीस को मज़बूती के साथ पकड़ने और उन पर अमल करने में है। और बुराई एवं फ़साद की पूरी जड़, किताब व सुन्नत को छोड़ने, उनकी तअ़लीमात को न मानने और दीन में बिदअत शुरु करने, लोगों के मनगढंत नज़रियों को क़ुर्आन व हदीस पर तरजीह देने के कारण है। इस अमल का संतुलन एंव सामंजस्य से कोई लेना देना नहीं।

शेष पृष्ठ..... 04 पर

# क़यामत की निशानियाँ

—डॉ0 मुहम्मद अजमल फ़ारूक़ी

### अम्र बिल मारूफ़ और नहीं अनिलमुनकर को छोड़ना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "बहुत जल्द वो वक़्त आयेगा कि नेक लोग उठा लिये जायेंगे और सिर्फ़ बुरे लोग ही बाक़ी रह जायेगें। वादे और अमानत की परवाह नहीं की जाएगी। लोग बिल्कुल बिगड़ जायेंगे। अच्छे और बुरे लोग आपस में यूं घुल–मिल जायेंगे" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हाथ की उंगलियों को दूसरे हाथ की उंगलियों में डाल कर दिखाया। सहाबा रज़ि0 ने पूछा "अगर ऐसा वक़्त हम पर आ जाये तो हम क्या करें?" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया, "जिसे नेकी समझो उस पर अमल करना, जिसे बुरा समझो उसे छोड़ देना, और उस समय अपने विश्वसनीय लोगों के पास चले आना और दूसरों को उनके हाल पर छोड़ देना"। (इब्ने माजा)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया, "जब लोग अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिलमुनकर छोड़ देगें तो अल्लाह उन पर अज़ाब नाज़िल करेगा, फिर वो दुआएं मांगेंगे तो दुआ कुबूल नहीं होगी"। (तिर्मिज़ी)

### इल्म का मिट जाना

हज़रत अनस रज़ि0 कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि "क़यामत की निशानियों में से ये हैं: 1. इल्म उठ जायेगा 2. जिहालत छा जायेगी 3. ज़िना आम होगा 4. शराब पीना आम होगा 5. मर्दों की कमी और औरतों की कसरत होगी कि पचास–पचास औरतों के लिए एक मर्द देख–रेख करने वाला होगा। (बुख़ारी)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 कहते हैं कि, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "इल्मे दीन का उठ जाना, जिहालत का फैल जाना, शराब पिया जाना, और खुल्लम खुल्ला ज़िना होना, क़यामत की निशानियों में से है। (मुस्लिम)

### बरकत का उठ जाना

हज़रत अनस रज़ि0 कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "क़यामत क़ायम नहीं होगी यहां तक कि लोगों पर बारिश बहुत ज़्यादा होगी, लेकिन ज़मीन कोई चीज़ नहीं उगलेगी"। (अहमद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "सूखा ये नहीं कि तुम पर बारिश न हो बल्कि सूखा ये है कि बारिश खूब बरसे लेकिन ज़मीन कोई चीज़ न उगले"। (मुस्लिम)

## दीन को दुनिया के बदले बेचना

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने फ़रमाया "क़यामत से पहले अंधेरी रात के टुकड़ों की तरह फ़ित्ने ज़ाहिर होंगे, एक आदमी सुबह मोमिन होगा और शाम को काफ़िर होगा, शाम के वक़्त मोमिन होगा और सुबह के वक़्त काफ़िर, लोग अपना दीन व ईमान दुनिया की दौलत के बदले बेच डालेंगे"। (तिर्मिज़ी)

## हलाल व हराम में फ़र्क़ ख़त्म हो जाना

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "लोगों पर एक ज़माना ऐसा आयेगा कि आदमी कुछ परवाह नहीं करेगा कि उसने माल हराम तरीक़े से कमाया या हलाल तरीक़े से"। (बुख़ारी)

## आलीशान मस्जिदों की तामीर और उस पर फ़ख़्र

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "क़यामत क़ायम नहीं होगी यहां तक की लोग मस्जिदों के मामलों में एक दूसरे पर फ़ख़्र दिखायेंगे"। (अबूदाऊद)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया "ये क़यामत की अलामत है कि आदमी मस्जिद से गुज़रेगा लेकिन दो रकअ़त नमाज़ अदा नहीं करेगा और सलाम सिर्फ़ उसे कहेगा जिसे पहचानता हो"। (तिर्मिज़ी) ❑❑

**जगनायक .....**

और अपने माबूदों की दुहाई भी दे रहे थे, हुबल और उज़्ज़ा की जय कह रहे थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से जवाब देने को कहा और कहा कि कहो "अल्लाह" हमारा सरपरस्त है तुम्हारा कोई सरपरस्त नहीं और यह भी कहने को कहा कि अल्लाह बहुत बुलन्द व बाला है उसके सिवा कोई माबूद नहीं[1]।

ग़ज़व–ए–उहद सनीचर के रोज़ शव्वाल का आधा महीना गुज़र कर हुआ, हिजरत का तीसरा साल था, इस ग़ज़वा की ख़ास बात यह थी कि मैदाने जंग में जाते हुए जो लोग पलट गये थे, उनको देखते हुए मुसलमानों के कुछ लोगों में निफाक का होना सामने आ गया और मुनाफ़िक़ीन ढकी–छिपी चीज़ न रहे कि मदीने के लोगों में कुछ ऐसे अफ़राद भी हैं जो दिल से इस्लाम नहीं लाए। वह मुसलमानों के गलबे और मकबूलियत को देख कर अपने को भी मुसलमान ज़ाहिर करते हैं और यह बात लोगों पर आशकारा (प्रकट) हो गई कि सच्चे मुसलमानों के दर्मियान कुछ ऐसे लोग भी हैं जो ज़ाहिरी तौर पर मुसलमान होने का दावा करने वाले हैं दिल से मुसलमान नहीं हैं, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी मालूम होने पर उनकी पर्दापोशी ही रखी, और उनसे भी अख़्लाक़ ही का मामला फरमाते रहे कि हो सकता है कि बिलआखिर उनके भी दिल ठीक हो जायें। ❑❑

1. ज़ादुल मआ़द 3/201, सही बुखारी किताबुल मग़ाज़ी, सीरते इब्ने हिशाम भाग–2

# इस्लाम के सही प्रतिनिधित्व की आवश्यकता

—मौलाना असरारुल हक़ कासमी

इस्लाम एक स्वाभाविक दीन है जो इन्सानी नस्ल का सही दिशा में मार्गदर्शन करता है और मानव जीवन के लिए ऐसी सम्पूर्ण व्यवस्था प्रस्तुत करता है जिस पर चल कर दुनिया व आख़िरत दोनों जहां की कामयाबी यक़ीनी है। इन्सानी ज़िन्दगी का कोई भी पहलू ले लीजिये, उसमें इस्लाम की शिक्षाएं बहुत ही सकारात्मक और लाभदायक हैं। अगर पूरी तरह से इस्लामी जीवन व्यवस्था को अपनी ज़िन्दगी में लागू किया जाये तो बहुत से मसलों का हल निकल आयेगा, क्योंकि इस्लामी जीवन व्यवस्था व अन्य व्यवस्थाओं में स्पष्ट अन्तर है। सबसे बुनियादी फ़र्क़ तो यही है कि इस्लाम अल्लाह की तरफ़ से है। यानि इस्लाम के नियम व क़ानून आसमानी हैं जबकि दूसरी व्यवस्थाएं इन्सान की बनाई हुई हैं। ज़ाहिर सी बात है कि वो नियम जो अल्लाह ने पेश किया है, उसमें ग़लती की ज़रा भी संभावना नहीं है, जबकि वो उसूल व क़ानून जो इन्सानों के अपने बनाये हुए हैं उनमें बहुत सी ग़लतियां होने की अनगिनत संभावनाएं मौजूद हैं। क्योंकि इन्सान से बहुत सी ग़लतियों, भूलों और गुनाहों का होना विचारों से परे बात नहीं है।

अगर इन्सानों की स्वयं की व्यवस्थाओं पर एक हल्की सी नज़र डाली जाये तो मालूम होता है कि इन व्यवस्थाओं को दो तरह के लोगों ने तैयार किया है, या तो वो लोग जो किसी व्यवस्था को बनाने के बाद अपने लाभ की प्राप्ति चाहते हैं, इस प्रकार वो शोहरत चाहते हैं, दौलत चाहते हैं, हुकूमत चाहते हैं या कुछ और चाहते हैं। ऐसे लोगों की बनाई हुई हर चीज़ यक़ीनन ग़लतियों से भरी व नाक़िस होगी। दूसरे वो लोग जो क़ौम या पूरी इन्सानियत को फ़ायदा पहुंचाने के लिए खुलूस के साथ कोई व्यवस्था बना देंगे तो भी उनकी बनाई हुई व्यवस्था को ग़लतियों से ख़ाली नहीं कहा जा सकता, इसलिए कि बहुत सी बातों को भूल जाने की संभावना उनके साथ मौजूद है। फिर ये भी ज़रूरी नहीं कि उन्हें हर चीज़ का ज्ञान हो और हर प्रकार का अनुभव हो। सारी चीज़ों का जानने वाला तो सिर्फ़ अल्लाह है।

हम देखते हैं कि बड़े–बड़े चिन्तकों, दार्शनिकों और माहिरों की बनायी हुई व्यवस्था, उसूलों व नियमों के परिणाम आगे चलकर बहुत घातक सिद्ध हुए। चाहे डारविन के सिद्धान्त हों या फ़्राइड के पेश किये हुए सिद्धान्त हों या कार्ल मार्क्स की बनायी हुई व्यवस्था हो। पिछली कुछ सदियों के दौरान कई सिद्धान्त सामने आये, उनमें मार्क्सिज़्म और कम्यूनिज़्म बड़े प्रसिद्ध हुए। ज़ाहिर में ये सिद्धान्त बड़े सुन्दर और प्रेक्टिकल दिखाई देते थे। क्योंकि उनमें सभी मनुष्यों के बीच हर प्रकार की बराबरी की बात

कही गई थी। सभी लोगों के बीच खाने–पीने, रहने–सहने, कमाने और जीवन बिताने में समानता का सिद्धान्त प्रस्तुत किया गया। नतीजा ये हुआ कि बहुत से ऐसे लोगों ने जो साम्राज्यवाद से परेशान हो चुके थे, रोज़ी–रोटी के लिए परेशान थे, ऊंच–नीच और छोटे–बड़े के फ़र्क़ से ऊब गये थे, उन्होंने इस प्रकार के सिद्धान्तों को अपनाने की कोशिश की। देखते ही देखते दुनिया में लाखों करोड़ों लोगों ने उन्हें क़ुबूल कर लिया। लेकिन अभी कुछ ही समय गुज़रा था कि उनकी पोल खुल गयी। मिसाल के तौर पर साम्यवाद को ही ले लीजिए जिसका उद्देश्य लोगों में समानता स्थापित करना बताया गया था, वो भी अपने उद्देश्य में सफल न हो सका। जब कि उस नज़रिये के मानने वालों की बहुत बड़ी संख्या दुनिया भर में मौजूद थी और कई शासनों में साम्यवाद को राएज करने का अवसर भी मिला। नाकामी की वजह ये हुई कि ये व्यवस्था जिस बराबरी का दावा करती थी, उस पर खरी नहीं उतरी।

भौतिकता से प्रभावित नये युग की व्यवस्थाओं ने इन्सानों का बहुत नुक़सान किया है। वो इन्सान जिनके पैदा किये जाने का मक़सद अल्लाह की इबादत और आख़िरत की कामयाबी निश्चित किया गया था उसे इससे हटा दिया गया और उसकी सारी ताक़त व योग्यता को भौतिकता की प्राप्ति में लगा दिया गया। अब ज़्यादातर लोगों की ज़िन्दगी रूपये–पैसे जमा करने और उन्हें बेकार चीज़ों में ख़र्च करने में गुज़रती है, बल्कि उसे शानदार गाड़ी, बड़ा और खूबसूरत बंग्ला, ऐश करने के ढ़ेरों साधन और बड़ा सा कारोबार चाहिए। अल्लाह तआ़ला ने उसे किस मक़सद के लिए पैदा किया था शायद बहुत से लोगों को इस बारे में मालूम ही नहीं और जिन्हें मालूम है उनमें से कितने जानबूझ कर अल्लाह के तय किये हुए मक़सद को पूरा करने की कोशिश नहीं करते। इन्सानी ज़िन्दगी के मक़सद को निश्चित करते हुए अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया "हमने इन्सानों और जिन्नातों को केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया है"। (अलक़ुर्आन) अपने मक़सद को भूल कर उसे न सुकून हासिल हुआ और न इज़्ज़त व भलाई नसीब हुई।

ज़मीन पर इस्लाम के अलावा दूसरे धर्म भी मौजूद हैं। जिनमें कई तो बेशक आसमानी हैं यद्यपि वो धर्म इस हद तक बदलाव का शिकार हो चुके हैं कि ये मालूम करना आसान न रहा कि उनमें क्या सही है और क्या ग़लत? यानि कौन सी बात अल्लाह की तरफ़ से है और कौन सी बन्दों की कही हुई हैं? बड़े पैमाने पर आसमानी किताबों और सहीफ़ों में मिलावट के कारण ये किताबें विश्वास योग्य नहीं रहीं। इसके अलावा इस्लामी दृष्टिकोण से भी ये बात महत्वपूर्ण है कि सबसे आख़िर में पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नज़िल होने वाले दीन को लागू कर दिया गया और पिछली सभी शरीअतों को रद्द कर दिया गया।

तमाम तारीफ़ों के लायक़ है वो ज़ात जिसने इस्लाम को सुरक्षित रखा ताकि क़यामत तक लोगों का सही मार्गदर्शन हो सके। एक शब्द और एक नुक़्ता भी नहीं बदला जा सका और न क़यामत तक कोई तब्दीली होगी, क्योंकि कुर्आन मजीद की हिफ़ाजत का ज़िम्मा खुद अल्लाह तआला ने लिया है। इरशाद फरमाया "इसमें कोई शक नहीं कि हमहीं ने कुर्आन मजीद नाज़िल किया और हम ही उसकी हिफ़ाजत करने वाले हैं"। (अलकुर्आन)

आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस मुबारक का बहुत बड़ा भण्डार भी मुसलमानों के पास है और उलमा ने दीन के फैलाव में जो किताबें लिखीं, वो भी बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। मानो दीने इस्लाम चौदह सौ सदियों के बाद भी ज़िन्दा है और उसकी दी हुई व्यवस्था पूरी तरह सुरक्षित है। ज़रूरत सिर्फ़ इस बात की है कि दुनिया भर में मुसलमान अपने दीन की ओर आकर्षित हों और उस पर अमल करें। ये नहीं कि इस्लाम की कुछ शिक्षाओं पर अमल कर लिया जाये और कुछ को नज़र अन्दाज़ कर दिया जाये। जैसा कि इरशाद फ़रमाया गया "इस्लाम में पूरे-पूरे दाख़िल हो जाओ"।

(अलकुर्आन)

इस ज़माने में एक और चीज़ जिसकी बहुत ज़्यादा ज़रूरत है, वो इस्लाम का सही प्रतिनिधित्व है। क्योंकि इस ज़माने में पूरी दुनिया की निगाहें इस्लाम पर लगी हुई हैं। कुछ इस्लाम कुबूल कर लेना चाहते हैं, और कुछ दुश्मनी के कारण इस्लाम को नुक़सान पहुंचाना चाहते हैं। जो लोग इस्लाम में दाख़िल होना चाहते हैं वो इस्लाम की खूबियों को जानना चाहते हैं और इस्लाम के मानने वालों की अमली ज़िन्दगी को करीब से देखने के ख़्वाहिशमन्द हैं, और जिन लोगों का मक़सद इस्लाम को नुक़सान पहुंचाना है वो इस्लाम के अन्दर कमियां तलाश करने में लगे रहते हैं। ऐसे मौक़े पर ईमान वालों का बहुत ज़्यादा सचेत रहने की आवश्यकता है। अगर मुसलमान इस्लाम के अनुसार जीवन व्यतीत करेंगे तो इस्लाम में दाख़िल होने वाले लोगों को इस्लाम के क़रीब आने का और ज़्यादा हौसला मिलेगा और इस्लाम की खूबियां उनके सामने साफ़ होंगी। इसी प्रकार इस्लाम दुश्मन तत्वों को भी ऐसे मौक़े नहीं मिलेंगे जिनको आड़ बनाकर वो इस्लाम के ख़िलाफ़ प्रोपेगन्डा कर सकें।

याद रखना चाहिए कि इस्लाम की सही नुमाइन्दगी यानि इस्लाम की बात करते समय इस बात का ख़्याल रखा जाये कि लोगों के सामने दीन की सही बात रखी जाए और केवल अपनी अक़्ल के एतबार से दीन को न गढ़ा जाये। दीन की बातें बहुत से लोगों की ज़िन्दगियों में इन्क़िलाब पैदा कर सकती हैं। दूसरे इस्लाम की नुमाइन्दगी अमल के ज़रिए की जा सकती है कि अपने अमल को इस्लाम के अनुसार किया जाये ताकि इस्लामी शिक्षा और मुसलमानों के अमल के बीच टकराव न दिखाई दे। अमल बहुत ज़रूरी है और इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

❑❑

# अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

**रोमनी फिर निकले आगे**– अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव की दूसरी बहस में बराक ओबामा के बढ़त बनाने की खबरों के बीच एक नई रायशुमारी में उनके रिपब्लिकन प्रतिद्वंद्वी मिट रोमनी को छह अंकों से आगे दिखाया गया था।

गैलप के ताजा चुनावी सर्वेक्षण के मुताबिक, मैसाचुसेटस के पूर्व गवर्नर रोमनी को संभावित मतदाताओं में से 51 प्रतिशत का समर्थन हासिल हो रहा था, जबकि ओबामा को सिर्फ 45 प्रतिशत का समर्थन मिल रहा था। गैलप ने सात दिन के औसत के आधार पर 16 अक्तूबर को सर्वेक्षण के नतीजे जारी किए। इसमें न्यूयार्क में हुई दूसरी बहस को शामिल नहीं किया गया था, जिसमें ओबामा को तमाम चूनावी सर्वेक्षणों ने विजेता घोषित किया था।

राष्ट्रपति ओबामा डेमोक्रेट पार्टी के उम्मीदवार हैं। डेमोक्रेट सांसदों ने जोर दिया था कि ओबामा के शानदार प्रदर्शन से अब रोमनी का प्रचार फीका पड़ जाएगा। आखिर कार ओबामा राष्ट्रपति चुनाव जीत गये, दुनिया को ओबामा से बड़ी उम्मीदें हैं।

**सऊदी महिलाएं कर सकेंगी वकालत**– सऊदी अरब की अदालतों में बहुत जल्द महिलाएं मुकदमें लड़ते नजर आएंगी। वहां की सरकार लगभग 300 महिलाओं को वकालत का लाइसेंस जारी करने की तैयारी कर रही है। इससे महिलाओं को वकालत का अधिकार देने के मुद्दे पर देश में जारी बहस पर विराम लगने के आसार बढ़ गए हैं।

**सुरक्षा परिषद की अस्थायी सदस्यता पांच नए देशों को**- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अस्थायी सदस्य का चुनाव ऑस्ट्रेलिया, रवांडा और दक्षिण कोरिया सहित पांच देशों ने जीता है। ये देश भारत, कोलंबिया, जर्मनी, पुर्तगाल और दक्षिण अफ्रीका की जगह लेंगे।

पन्द्रह सदस्यीय परिषद में दो नए अस्थायी सदस्य अर्जेंटीना और लक्जबर्ग 2013 से अपना दो वर्षीय कार्यकाल शुरु करेंगे। संयुक्त राष्ट्र की 193 सदस्यीय आम सभा में सुरक्षा परिषद के अस्थायी सदस्य के तौर पर चुने जाने के लिए किसी देश को 129 मतों या दो तिहाई वोटों की जरूरत पड़ती है। रवांडा को 148, ऑस्ट्रेलिया को 140 और अर्जेंटीना को 182 मत मिले। दक्षिण कोरिया ने कंबोडिया और भूटान को पछाड़ते हुए एशिया प्रशांत की एक सीट पर कब्जा जमाया। उसे दूसरे दौर के मतदान में 149 मत मिले। ❑❑